ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 8 अंक 34 22 से 28 अगस्त, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 भा. कृ.-01

अन्धविश्वास तथा तांत्रिकों के विरूद्ध आवाज बुलन्द करने वाले डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर की निर्मम हत्या

सारे देश में रूढ़िवादिता तथा अन्धविश्वास के विरूद्ध आन्दोलन करेगा आर्य समाज

– स्वामी अग्निवेश

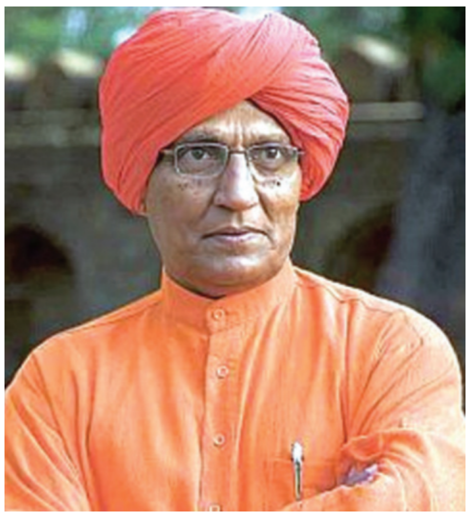

महाराष्ट्र में अंधविश्वास के खिलाफ जबरदस्त अभियान चलाने वाले सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की मोटरसाईकिल पर सवार दो युवकों ने पुणे की सड़क पर गोली मारकर हत्या कर दी। वे 69 वर्ष के थे।

डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर की नृशंस हत्या पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्चस्वी प्रधान एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रान्तधर्मी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वास के विरूद्ध बिगुल फूंकते हुए हुंकार भरी कि आर्य समाज सारे देश में अन्धविश्वास और ढोंगी बाबाओं एवं तांत्रिकों तथा धार्मिक ठगों से आम जनता को मुक्ति दिलाने के लिए आन्दोलन छेड़ेगा और महर्षि दयानन्द जी की दी हुई पाखण्ड खण्डिनी पताका को चारों दिशाओं में फहरायेगा। उन्होंने कहा कि हमारा समाज और राष्ट्र आज साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, शोषण, नशाखोरी और नारी उत्पीड़न का शिकार है। समाज और राष्ट्र को इन महाव्याधियों से मुक्त कराने के लिए आर्य समाज ने कमर कस ली है। स्वामी जी ने कहा कि हमारे देश में अन्धविश्वासों के अंकुर जितनी तेजी से पनपते हैं, उतने अन्यत्र शायद ही कहीं पनपते हों। इन ढोंगी व्यक्तियों के व्यापार पर किसी तरह का कोई प्रतिबन्ध ही यहाँ पर नहीं है। उन्होंने सारे देश में कानून के द्वारा इसे रोके जाने की माँग की। स्वामी जी ने कहा कि धर्मान्धता और रूढ़िवादिता के विरूद्ध आवाज उठाने वाले डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि पूरे देश में इस प्रकार के क्रिया-कलापों को सख्ती के साथ रोका जाये। जो अध्यादेश अभी-अभी महाराष्ट्र सरकार ने बनाया है उसे केन्द्र की सरकार संसद में लाकर **'राष्ट्रव्यापी अंधश्रद्धा निर्मूलन'** का कानून बनाये।

1944 में सतारा महाराष्ट्र में जन्मे डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर दस भाई बहनों में सबसे छोटे थे।

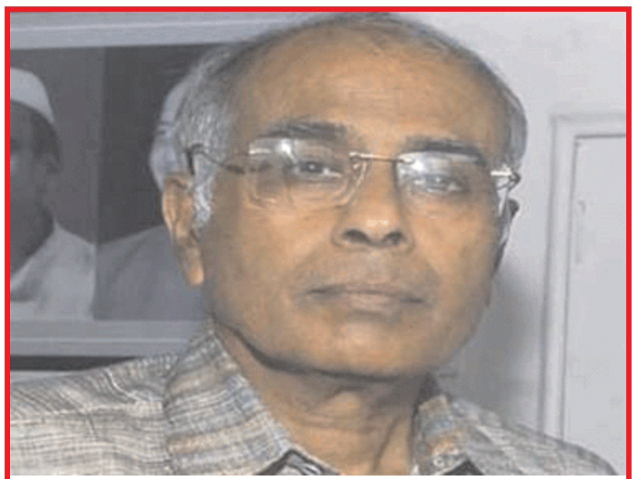

सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर

उन्होंने बाबाओं के चमत्कार तथा ढकोसलों के विरूद्ध जबरदस्त अभियान चला रखा था तथा समाज को जागरूक करने के लिये वे राज्य भर में व्याख्यान आदि भी देते रहते थे। उन्होंने लगभग एक दर्जन पुस्तके भी लिखी थी। अन्धविश्वास तथा बाबाओं की ठगी के विरूद्ध अभियान चलाने के कारण डॉ. दाभोलकर को कई समूहों का विरोध निरन्तर झेलना पड़ रहा था। महाराष्ट्र में ''अन्धश्रद्धा निर्मूलन विधेयक'' का मसौदा बनाने में डॉ. दाभोलकर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लेकिन 6 बार विधानसभा में पहुँचने के उपरान्त वे इसे पारित नहीं करवा सके थे। लेकिन उनकी शहादत के उपरान्त अब निश्चित रूप से कानून बनेगा ऐसा लगने लगा है। सूत्रों के मुताबिक महाराष्ट्र सरकार अध्यादेश के जरिये इसे तत्काल प्रभाव से लागू करने वाली है।

डॉ. दाभोलकर ने जब यह देखा कि कैसे जादू-टोने के नाम पर कुछ तांत्रिक ओझा और बाबा पूरे समाज को मूर्ख बना रहे हैं। महिलायें बेटे की चाहत में कथित बाबाओं की शरण में जाती हैं और बाबा तथा तांत्रिक उनका शोषण करते हैं। इसी तरह कभी धन के लिए कभी शोहरत के लिए तो कभी किसी से बदला लेने के लिए लोग ढोंगी बाबाओं के जाल में फंस जाते हैं। समाज में ऐसे अंधविश्वास पर लगाम लगाने के लिए उन्होंने महाराष्ट्र में अंधश्रद्धा विरोधी आवाज को तेज किया जिससे ढोंगी बाबाओं और तांत्रिकों में खलबली मची हुई थी। और उसी के परिणाम स्वरूप एक निडर सामाजिक कार्यकर्ता षड्यन्त्रकारियों का शिकार हो गया।

शराब हटाओ देश बचाओ

राष्ट्रव्यापी शराबबन्दी आन्दोलन की रूपरेखा निर्धारित करने हेतु

1 सितम्बर को प्रातः 10 बजे

अग्निलोक आश्रम (बहल्पा-गुड़गाँव-सोहना रोड पर स्थित) में भारी संख्या में पहुँचें

1 सितम्बर (रविवार), 2013 को सुबह 10 बजे से 1.00 बजे तक अग्निलोक बहल्पा में राष्ट्रव्यापी शराबबन्दी आन्दोलन की रूपरेखा तय की जायेगी। कृपया एन. सी. आर. की इस पहली बड़ी बैठक में पूरी ताकत से समय पर पधारें और शराब की लानत मिटाने का संकल्प लें। – स्वामी अग्निवेश

सत्यार्थ प्रकाश की तेज धाराएँ

– प्रा. दयाल आर्य

सत्य केवल ऋत् मात्र सत्य विशुद्ध सत्य और प्रकाश?सत्य का सत्य के अर्थ का परमात्मा की यथार्थ वेदवाणी का ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषियों के सत्य बोधा का इस सत्य के अर्थ का प्रकाश अर्थात् 'सत्यार्थ प्रकाश'! अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश'!! कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश'!!!

और इस सत्य के अर्थ का प्रकाश करने हारा?पाँच हजार वर्षों के तिमिरोच्छेदक अंधकार विनाशक महान ज्योतिधर वेद भास्कर सत्य अर्थ के प्रकाश की तेज धाराओं को फैलानेहारा महर्षि दयानन्द सरस्वती! और प्रयोजन?एक ही, हाँ मात्र एक ही! जो पदार्थ जैसा हो उसे वैसा ही मानना और मनवाना। यही सत्य का वास्तविक स्वरूप प्रकट करना। इस प्रकट सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना।

हठ को छुड़ाकर हकीकत का स्वीकार कराना। इसके लिए - धर्म के नाम पर मत पंथ वाद संप्रदाय मजहब के चंगुल से मनुष्य को बाहर निकालकर खरे मानवरूप में निर्माण करना।

परस्पर प्रेम, सौहार्द और सुख के मार्ग पर मानव समाज को अग्रसर करना चलाना।

किसी देश या जाति के लिए ही नहीं परन्तु सम्पूर्ण मानव जाति की उन्नति के लिए सत्यार्थ पथ प्रदर्शित करना मननशील मानवों को गहन अंधकार से छुड़ा 'परमतेज' के दर्शन कराना। संसार का कल्याण करना ही एक मात्र प्रयोजन।

महर्षि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश की रचना करने का महान उद्देश्य सम्पूर्ण मानव जाति को एक वैदिक मानवधर्म के झण्डे के नीचे एकत्रित करना था। इसके लिए मजहब, पंथ, सम्प्रदायों को धर्म में परिवर्तित करना यह उनका लक्ष्य था। कारण कि सम्प्रदायों का आधार धर्म है, परन्तु इनकी विकृतियों, रूढ़ियों और अन्धविश्वासों ने धर्म को हिन्दु-ईसाई-मुस्लिम आदि मजहबों में रूपान्तरित कर दिया है। जो इन विकृतियों को दूर कर दिया जाये तो सम्पूर्ण मानवजाति को एक धर्मी बनाया जा सकता है।

इस महान् कार्य के लिए स्वामी दयानन्द ने सर्व प्रथम चाँदपुर के मेले में साम्प्रदायिक विद्वानों को इकट्‌ठा करके, परस्पर सत्यासत्य का विचार करके, धर्म में हुई विकृतियों और परस्पर के द्वेष को दूर करने का प्रयत्न किया क्योंकि उनकी दृष्टि में यह कार्य इस तरह सरलता से हो सकता था। परन्तु भोली भाली जनता को भ्रमजाल में फंसाये रखने वाले, स्वार्थ सिद्ध करने हारे मजहबी साम्प्रदायिकों ने पूर्ण साथ सहकार नहीं दिया।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ उपरोक्त दृष्टिकोण से लिखने में आया है। परस्पर के द्वेष का नाश करना यह एक मात्र सत्यार्थ प्रकाश का उद्देश्य है। जो लोग सत्यार्थ प्रकाश की इस भावना को नहीं समझते वे घोर अंधकार में हैं। स्वामी दयानन्द ने सम्पूर्ण ग्रन्थ में किसी के प्रति व्यक्तिगत रूप से आक्षेप नहीं किया है। किन्तु साम्प्रदायिक विकृतियों की सप्रमाण समीक्षा की है।

इन विकृतियों में ईश्वर और मनुष्य के बीच कोई अवतारी पुरुष अथवा पैगम्बर का होना, उनमें चमत्कार होना और उनकी पूजा करनी और करानी यह सभी सम्प्रदायों में लगभग समानरूप से देखने में आता है।

इन विकृतियों का आरम्भ महात्मा बुद्ध और महावीर के समय से हुआ है। इन महात्माओं की मृत्यु के बाद उनके अनुयायिओं ने ईश्वर के स्थान पर उनकी पूजा शुरू कर दी। देखा-देखी आर्य हिन्दुओं ने भी दस से चौबीस अवतारों की कल्पना करके बौद्धों के समान मन्दिर बनवा पूजा पाठ का आडम्बर शुरू कर दिया। ऐसा ही आडम्बर रोमन कैथोलिक ईसाइयों ने इशु और मरियम के नाम पर अपने विशाल चर्चों (गिरजाघरों) में शुरू कर दिया। मुस्लिमों ने मोहम्मद साहब की मूर्ति की स्थापना तो नहीं की परन्तु उन्हें खुदा के साथ एक विशेष स्थान प्रदान करके उनके जीवन के साथ अनेक चमत्कार जोड़ दिये।

स्वामी दयानन्द का यह महान् संदेश है कि ईश्वर ज्ञान का स्रोत, सर्वशक्तिमान, सृष्टि का कर्ता, व्यवस्थापक और नियामक है। इससे विपरीत महापुरुष महान् से महान् होते हुए भी हाड़-माँस के पिंजरे में बंधा हुआ, पुण्य-पाप का कर्ता, आवागमन में चक्कर काटने वाला, कर्म बन्धन में परतंत्र ऐसा एक मनुष्य है, जिससे उसमें मानवीय दुर्बलता होनी स्वाभाविक है। अतः मनुष्य कभी भी ईश्वर का स्थान नहीं ले सकता।

ऋषि दयानन्द का यह तत्त्वदर्शन ही वैदिक धर्म है। इस तत्त्वदर्शन से विपरीत मान्यता ही विकृति है। और संसार के सभी मत-पंथ इस विकृति से ग्रस्त है।

सभी सम्प्रदायों में विकृतिरूपी बीमारी समान है इसलिए इसका उपचार भी समान है, इस दृष्टिकोण से ऋषि दयानन्द ने युग परिवर्तनकारी, क्रान्तिकारी, दिव्य प्रासादिक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की।

ग्रंथ रचना

इस अनुपम ग्रंथ की रचना का आधार महर्षि दयानन्द का विशाल शास्त्र ज्ञान, व्यापक अनुभव और दिव्य प्रतिभा है।

कार्ल मार्क्स ने इंग्लैण्ड में विशाल ग्रंथालय का उपयोग करके 34 (चौंतीस) वर्षों में ''केपिटल'' ग्रन्थ को पूरा किया। परन्तु महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्‌भुत ग्रन्थ की रचना कितने काल में की वह जानते हों?

साढ़े तीन मास! हाँ मात्र साढ़े तीन मास (महीने) में मौखिक बोलकर महान ग्रंथ की रचना की। इस मानव निर्माण शास्त्र में 377 ग्रंथों के प्रमाणों को उद्धृत किया, 1542 संस्कृत मंत्र-श्लोकों को लिखा, 1886 प्रमाणों की संख्या प्रस्तुत की। ऋग्वेद से लेकर पूर्वमीमांसा तक लगभग तीन हजार संस्कृत ग्रन्थों और भाषा के दूसरे अनेक ऐसे हजारों ग्रन्थों का निचोड़ दर्शाया।

(महर्षि दयानन्द भ्रांति निवारण में लिखते हैं कि मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेकर पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से लगभग तीन हजार ग्रन्थों को मानता हूँ।)

स्वरूप और विषय

इस बृहत्काय ग्रंथ में चौदह उल्लास अर्थात् आनन्द देने वाले वा प्रकाश फैलाने वाले प्रकरणों की समुल्लास नामों से रचना की गई है।

पूर्वार्द्ध में सामान्य भूमिका के साथ दस समुल्लास क्रमशः दस श्रेणियाँ चढ़ता-चढ़ता मनुष्य विशुद्ध मानवरूप में निर्माण होकर जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सके उसके लिए विधि है।

प्रथम समुल्लास में - ईश्वर के सच्चे स्वरूप की पहचान कराने के लिए एक सौ नामों की व्याख्या की है।

दूसरे में - संतानों की शिक्षा और माता-पिता के कर्तव्य दर्शाये हैं।

तीसरे में - ब्रह्मचर्य और विद्या प्राप्ति से जीवन की सफलता बताई है।

चौथे में - गृहस्थ धर्म बतलाकर सुखी संसार की चाबियों का गुच्छा झुलाया है।

पाँचवें में - मुमुक्षु के लिए वानप्रस्थ और संन्यस्त की राह दर्शाई है।

छठे में - राजधर्म, आर्य राजनीति का दर्पण और सुराज्य का चित्र खींचा है।

सातवें में - वेदज्ञान और ईश्वर के स्वरूप को प्रकट किया है।

आठवें में - सृष्टि उत्पत्ति का विज्ञान और तत्त्वज्ञान का दर्शन कराते हुए ''स्वराज्य'' का शंखनाद किया है।

नौवें में - विद्या और अविद्या, बन्ध और मोक्ष के स्वरूप को जानकर ही मानव जीवन सफल हो सकता है, यह संदेश सुनाया है।

दशवें में - आचार अनाचार भक्ष्य अभक्ष्यादि से व्यक्ति, समाज, देश और जाति के उत्थान के लिए प्रेरणा के पीयूष का पान कराया है।

इस प्रकार पूर्वार्द्ध यह मनुष्य जीवन की सार्थकता को पूर्ण करने के लिए बताई हुई ''विधि'' की ''दश पैड़ियों'' की एक सीढ़ी है।

पूर्वार्द्ध यह बाल और युवा, गृहस्थ और त्यागी, स्त्री और पुरुष, राजा और रंक सबके लिए आत्मोन्नति के शिखर पर चढ़ने की निसरणी है।

यह लौकिक अभ्युदय और निःश्रेयस की मंजिल तक पहुँचाने की निःश्रेणी है।

यह तप, त्याग और प्रेम के नैसर्गिक चढ़ान में सबल, विमल, निर्मल, अविचल ऐसी सुवर्ण सोपान दशक की सनातन, संलग्न एक निःसरणी है - उत्सरणी है और उत्तरार्द्ध?जहाँ ''विधि'' होती है वहाँ ''निषेध'' भी होता है।

पूर्वार्द्ध में दर्शाये गये आत्मोन्नति के मार्ग पर कदम बढ़ाते समय अन्यों द्वारा बीच में विघ्न, बाधाएँ और अन्तरायों का झुण्ड खड़ा कर दिया जाये तब इसे पहचानना जरूरी हो जाता है।

ईश्वर पुत्र - ऋषि मुनियों की सन्तान, वीरों की वारसदार यह आर्य जाति देवत्व के पथ से कैसे भटक गई?दीन-हीन किस कारण बनी?पतन के गहरे गड्ढे में कैसे गिर पड़ी?कारण?इसने विधि को छोड़ दिया, ग्रहण करने योग्य को त्याग दिया। निषेध को अपना लिया त्याज्य को धारण किया।

वैदिक धर्म के उदात्त विधि वाक्यों को छोड़ दिया, परिणाम स्वरूप सम्प्रदाय और मत-मतान्तरों के निषिद्ध-त्याज्य अन्तरायों ने इसे घेर लिया।

इसलिए पूर्वार्द्ध में स्वयं कहाँ खड़ा है, स्वयं की क्या स्थिति है, यह ''स्व'' की परीक्षा करके जान लेने के पश्चात् उत्तरार्द्ध में ''पर'' या पराये की परीक्षा का पथ प्रदर्शित किया हैं

जिससे वह किसी मत-मतान्तरों द्वारा बुद्धि भ्रम के चक्कर में न पड़े। दूसरों को भ्रमजाल में न फंसाये और न फंसने दे। इसलिए अन्तिम चार समुल्लासों में -

ग्यारहवें में - हिन्दुओं के मत-मतान्तरों के भ्रमजाल का पर्दाफाश किया है।

बारहवें में - बौद्ध, जैन और चार्वाक मतों के दुर्गम दुर्ग को भेद डाला।

तेरहवें में - ईसाई मत के 130 विषयों को मानव की सामान्य बुद्धि की कसौटी पर चढ़ाकर क्रान्तिकारी विचारों की चिनगारी जगा कर सबको विचारने पर विवश किया।

चौदहवें में - इस्लाम की, केवल कुरान के 159 सिद्धान्तों के ढोल पर तर्क और युक्ति की डण्डी बजाकर पोल खोल दी।

इन चारों समुल्लासों को लिखने से पहले प्रत्येक की अनुभूमिका में स्पष्टता करते हुए कहा कि इनमें कोई व्यक्तिगत द्वेष, किसी समाज के प्रति घृणा, किसी जाति पर आक्षेप करने में नहीं आया, परन्तु सत्य का प्रचार और प्रसार मात्र उद्देश्य है।

जिससे कि प्रत्येक मनुष्य प्रथम ''स्व'' के पश्चात् 'पर' की परीक्षा का अधिकार प्राप्त करके सत्य के निकट पहुँच सके।

कैसी सुन्दर और अद्‌भुत ग्रंथ रचना की जिससे मानवरूपी क्षुद्र प्राणी सत्यार्थ के शिक्षणालय में प्रवेश पाकर प्रथम श्रेणी में आस्तिकता से 'ईश्वर की' पहचान प्राप्त कर क्रमशः चौदहः श्रेणियों में 'स्व' - 'पर' और 'परात्पर' का अभ्यास करता हुआ उच्चतम विश्व विद्यालय में ज्ञानामृत के घूंट पीता हुआ सम्पूर्ण मानवरूप में निर्माण पाकर विशुद्ध मानव होने की दीक्षा प्राप्त कर सके।

धन्य! युग द्रष्टा, आचार्यकुल - कमल - दिवाकर दयानन्द! आपके इस सर्वतोभद्र, सत्यप्रकाशक, मानव निर्माण के शिक्षाग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को!!!

इसलिए तो मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी अपना अन्तरतम हृदय खोलकर कहते हैं कि -

यदि सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपये भी होता तब भी मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को बेचकर इसे खरीदता। कारण कि मैं जहाँ-जहाँ भी इसमें दृष्टि करता हूँ वहाँ-वहाँ इसमें ऐसी विद्या भरी पड़ी है कि मानव मात्र की बुद्धि को चकित कर दे, मैंने इस ग्रन्थ को अठारह बार विचार पूर्वक पढ़ा है। प्रत्येक समय मुझे नई-नई बातें मिली हैं।

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल फांसी के तख्त पर चढ़ने से एक दिन पूर्व समाप्त की हुई अपनी आत्मकथा में मानव निर्माण के इस अद्‌भुत ग्रन्थ के विषय में लिखते हैं कि -

''मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिससे जीवन ही बदल गया, सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नया ही पृष्ठ जोड़ दिया।

......परमात्मा से मेरी प्रार्थना है कि वह मुझे इस देश में जन्म दे जिससे कि मैं उसकी पवित्र वाणी वेदवाणी का अनुपम नाद मुनष्य मात्र के कानों तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँ।

इस मानव निर्माण के अद्‌भुत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध की अनुपम रचना देखकर आयुर्वेद का प्रयोजन बतलाते हुए भगवान आत्रेय और धन्वन्तरि के शव्द याद आ जाते हैं कि -

स्वस्थ के स्वास्थ्य का रक्षण करना और रोगियों को, रोगमुक्त करना यह आयुर्वेद का प्रयोजन है। (चरक सूत्र 30/31 एवं सुश्रुत सूत्र 1/13)

ठीक सत्यार्थ प्रकाश का पूर्वार्द्ध यह स्वस्थ व्यक्ति, समाज, जाति और राष्ट्र के स्वास्थ्य का रक्षण करने हारा है, वेदोक्त विधि हैं, मंडन है।

उत्तरार्द्ध यह बीमार व्यक्ति, समाज, जाति और राष्ट्र के रोग का नाश करने के लिए अति आवश्यक ऐसी कड़वी औषधियों का प्रयोग रूपी खण्डन और आलोचना के रूप में है।

अमर हुतात्मा पण्डित लेखराम जी ने इस बात को सदृष्टान्त सुन्दर शव्दों में कहा है कि -

सत्यार्थ प्रकाश ऐसे परोपकारी मनुष्य के समान है जिसके एक हाथ में औषधि की शीशी और दूसरे हाथ में रोगी के लिए आरोग्यप्रद भोजन लिये हुए हैं। जिसके उत्तरार्द्ध में औषधि है तो पूर्वार्ध में वेदरूपी स्वास्थ्य का मण्डनरूपी आहार रोगी के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

सत्यार्थ प्रकाश खण्डन का ग्रन्थ होने का भ्रम फैलाने वालों को समझ लेना चाहिए कि उत्तरार्द्ध यह रोगी की औषधि है। पूर्वार्द्ध यह स्वस्थ जीवन के लिये अमृत है। अतः स्वास्थ्य के रक्षण के लिए, बीमारी को दूर करने के लिए दोनों की परम आवश्यकता है।

तदुपरान्त महर्षि दयानन्द का वाह्य शरीर जैसे भव्य और तेजस्वी था वैसे ही उनके मानस शरीर का जिसे दर्शन करना हो, उनके आत्मा को पहचानना हो उसे सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका, अनुभूमिकाओं, स्वमंतव्यामंतव्य से उनकी मान्यता में और ग्रन्थ के आदि तथा अंत में उद्धृत वेदमंत्रों द्वारा उनके हृदय के भावों का अवलोकन जरूरी है। यह देखने वाले को ऋषि के अन्दर से मंथन होकर निकलता प्रेम, उदारता, नम्रता, विवेक, विनय और निष्पक्षता के दर्शन होंगे। उनमें से सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की भावना झरती दिखाई देगी और पाठक इस भावना को अपने अन्दर में आत्मसात् करते हुए पढ़ेगा तो जीवन की ज्वलंत ज्योति के समान यह ग्रन्थ विश्वकल्याणकारी है यह अवश्य अनुभव करेगा।

– शेष अगले अंक में

ऐ दुनियाँ के गुरुओं! सोचो, आत्मपरीक्षण करो.....

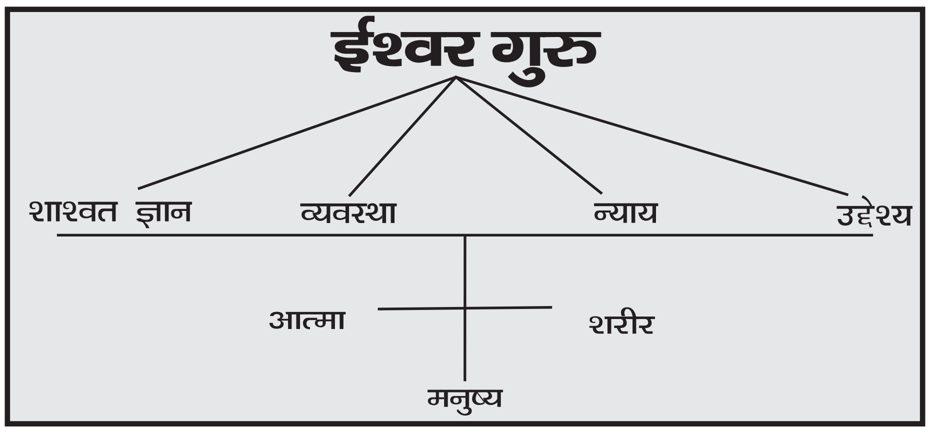

आजकल समाज में गुरुपूर्णिमा का महत्त्व अधिक बढ़ गया है। गुरु का पूजन, गुरु का स्मरण, गुरुदक्षिणा आदि बहुत कुछ बातें चलती हैं। इस समय जगह-जगह गुरुओं के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने वाले बड़े-बड़े बैनर्स और पोस्टर्स लगे हुए दिखाई दे रहे हैं। समाज में गुरु के बिना जीवन नहीं और गुरु ही सब कुछ हैं, यही धारणा बन चुकी है। सम्प्रति दुनियाँ में अनेकों मत-पन्थ हैं, जो कि स्वयं को धर्म की संज्ञा दे रहे हैं। उनके भी अलग-अलग गुरु हैं। हर एक के 'गुरुमन्त्र' भिन्न-भिन्न और शिक्षाएँ भी अलग-अलग दीखती हैं।

मत-पन्थ में भी पुनश्च नानाविध जातियाँ हैं और ये सब लोग इन्हें जन्म से मानते हैं। जन्म से पन्थ, जन्म से जाति और फिर हर एक जाति में अलग-अलग गुरु और उनके अलग-अलग गुरुमन्त्र! हर एक गुरु ने गुरु को ही सर्वश्रेष्ठ मानने की बात कही है। गुरु को ही ब्रह्म का रूप बताया है। लोग अपने-अपने गुरुओं की पूजा कर रहे हैं और उन्हें वे ब्रह्म समझ रहे हैं।

गुरु ने गुरुमन्त्र देना और उस मन्त्र को भी गुप्त रखना, ऐसा बताया जाता है। 'गुरु मन्त्रों को प्रसिद्ध करोगे, तो मन्त्र की महत्ता, शक्ति कम हो जायेगी, ऐसा वे आग्रह करते हैं। गुरु को इतना महत्त्व है कि लोग गुरु को स्मरण किये बिना, उनका आशीर्वाद लिये बिना कुछ नहीं करते। गुरु को पहले भोजन खिलाना तथा उनकी सेवा करना आदि को वे अग्रक्रम देते हैं।

इसके कारण सभी पन्थों, मतों व जातियों के गुरु लोग आलसी, प्रमादी, सुखासीन, ढोंगी, लालची, अज्ञानी, ईर्ष्यालु, द्वेषी और छली-कपटी बनें हैं। दुनियाँ के लोगों को अज्ञान में रखकर वे सभी अपना उद्योगधन्धा चलाते हैं। अन्य कुछ कार्य करना नहीं हो सका, तो गुरु बनने का एक आसान और हमखास जमने वाला एक तरह का व्यवसाय ही बन चुका है। 'गुरु कुछ ज्ञान देते नहीं, वे तो केवल आशीर्वाद देते हैं।' इससे लोग समझते हैं कि गुरु के आशीर्वाद से ही कल्याण होता है।

गुरुओं ने अपना एक जाल बिछा दिया है। उन्होंने अपने बराबर के अज्ञानी, भयग्रस्त, लालची लोगों को अपने साथ जोड़कर रखा है। आज सारी दुनियाँ में जो भी झगड़े हैं, वे सभी गुरुओं के कारण ही हैं। सर्वत्र अशान्ति व दु:ख हैं, तो वह केवल गुरुओं के कारण हैं। कितनी बड़ी विडम्बना है कि जो दुनियाँ में मतभेद, अज्ञान, अशान्ति फैलाता है, वह ही स्वयं का महत्त्व बढ़ाकर पूजा करवाता है। कोई स्वयं को भगवान का अवतार बताता है, तो कोई अपने को प्रेषित बताता है, तो कोई स्वयं को ईश्वर का इकलौता पुत्र बताता है। इन गुरुओं ने अज्ञानी लोगों को चक्कर में डाल रखा है। उन्होंने लालच देते हुए बताया कि 'तुम्हारे पाप भस्म होंगे, क्षमा किये जायेंगे, पाप नष्ट हो जायेंगे, तुम्हारे लिये भगवान के पास सिफारिश करेंगे, आशीर्वाद देंगे, क्योंकि आशीर्वाद से ही सबकुछ ठीक हो जायेगा। फिर आप सभी भक्तगण स्वर्ग में जाओगे अन्यथा गुरु को न मानोगे तो नरक में जाओगे, तुम्हारा सब का विनाश होगा, इस प्रकार की भयकम्पित करने वाली बातें गुरुओं ने बताई।

इतना ही नहीं, गुरुओं ने अपनी-अपनी बुद्धि से, मतलब से जो कुछ लिखा, वह सबकुछ ईश्वर ने ही उनके अन्त:करण में उतार दिया है, यह भी उन्होंने बताया। फिर 'ऐसे गुरु को, ऐसी पुस्तकों को जो मानेगा व स्वीकारेगा उनके लिए स्वर्ग के द्वार खुले होंगे और जो इन्हें स्वीकारेगा नहीं, उन्हें मृत्युदण्ड देने का भी आदेश परमात्मा की ओर से ही है,' ऐसा उन्होंने बताया। गुरुओं ने अपना महत्त्व और प्रचार बहुत सारे चमत्कारों के माध्यम से किया इसके लिए उन्होंने अनेकों गप्प जोड़ दिये तथा हथकण्डे रच दिये। इन गुरुओं ने अपने-अपने धर्मग्रन्थों को सर्वश्रेष्ठ बताया। ' इन ग्रन्थों पर कोई भी प्रश्न, शंका, अविश्वास आदि न करें अन्यथा वह अधर्मी, पापी व नीच होगा व नरक में जायेगा। गुरु जो भी कहेगा, उस पर भी कोई व्यक्ति प्रश्न, संशय और अविश्वास न करे, नहीं तो उसका भी सत्यानाश हो जायेगा,' ऐसे आदेश गुरुओं ने दिये। इससे बुद्धि, तर्क व जिज्ञासाओं पर ताले लग गये। **'बाबा वाक्यं ब्रह्मप्रमाणम्।'** यही प्रचार सर्वत्र हो गया। इन बातों से समाज में अज्ञान अधिक मात्रा में बढ़ गया। गुरु लोग अज्ञानी, आलसी, प्रमादी, दुराचारी बनकर भी अपना महत्त्व बड़प्पन बनाये रखने के लिए कोशिश करते रहें और दूसरों से अपनी पूजा करवाते रहें। प्रामाणिकता समाप्त हुई।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने वेदज्ञान के आधार पर परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार सत्य क्या है, यह जान लिया और साथ ही ईश्वर, धर्म, जीवन का लक्ष्य, उसका मार्ग, जो सबके कल्याण का है, यह बात बताई। अपने साहित्य में उन्होंने नकली, स्वार्थी गुरुओं की पोल खोलकर रख दी हैं। अपने सत्यार्थ प्रकाश इस ग्रन्थ के 11 से 14 समुल्लासों में स्वामी जी ने मत-मतांतरों, उनके ईश्वरों, गुरुओं और हथकण्डों की भी पोल खोली है।

परमात्मा ने मनुष्यों को छोड़कर सारी दुनियाँ व प्राणियों को परिपूर्ण बनाया है। सुख से जीने का रास्ता उन्हें जन्म से मिलता है और निसर्ग के सुख-नियमों की आज्ञा पालन करना भी उनके लिए अनिवार्य है। इसलिए वे भोगयोनि में रहते हैं। परन्तु मनुष्य अपनी बढ़ियाँ कार्यविधियाँ होते हुए भी, बुद्धि, अन्त:करण व उत्तम रहकर भी वह परिपूर्ण नहीं है। क्योंकि मनुष्य जन्म यह आत्मकल्याण के लिए है, केवल भोगने के लिए नहीं। भोगना तो प्रवृत्तिनुसार होता है और आत्मकल्याण तो प्रवृत्ति की निवृत्ति करने पर ही सम्भव है। ईश्वर ने आत्मकल्याण के लिए सारी दुनियां, सृष्टि का खेल रचाया है, किन्तु आत्मा अल्पज्ञ अल्पशक्तिवाला है। इसलिए परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों के माधयम से वेद का शाश्वत ज्ञान देकर रखा है। अत: परमात्मा ही सारी दुनियाँ का सच्चा और पहला गुरु है। योगदर्शन में भी यही बात बतलाई है और परमात्मा का गुरुत्व शाश्वत सत्यज्ञान देने में, सबके कल्याण में, पक्षपातरहित न्याय में, सभी आत्माओं को सुख, शान्ति, आनन्द प्राप्त कराने का मार्ग बताने में, साधन सामग्री देने में हैं। वह परमपिता परमात्मा आज भी हम सबका प्रत्यक्ष गुरु है। जो भी मनुष्य इस श्रेष्ठ गुरु का शिष्य बनता है, उसे वह गुरु सुयोग्य बनाता है, सत्यज्ञान देकर उसे सन्मार्ग बताता है, उसके कर्मों को यथायोग्य फल देता है, किन्तु वह गुरु निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है। ईश्वर को अपना गुरु बनाने के लिए मानव को स्वयं को शुद्ध व पवित्र बनना पड़ता है।

यह शुरू में सभी में नहीं हो सकता, इसलिए मनुष्यरूप में ईश्वर ने आरम्भ में चार ऋषियों को सभी मानव मात्र को वेद का ज्ञान देने के लिए कहा। इस तरह से पहला गुरु परमात्मा हुआ, जो कि निराकार है। अब मनुष्यरूपी गुरु 'ऋषि' हुए। अत: वे जो भी वेदज्ञानहै, वही बताते रहे और लोगों को सच्चे गुरु की ओर जाने का उपदेश करते रहे। उनके पश्चात् मनुष्य रूप में और आगे कालान्तर में अनेकों ऋषि हुए। इस तरह से ऋषि परम्परा चली, जिन्होंने वेदज्ञान का प्रचार व प्रसार किया तथा वेद को ही आत्मकल्याण का रास्ता बताया। इन सभी ने भी ईश्वर को ही सबका मूल व सच्चा गुरु परमात्मा को ही बताया। उन्होंने कभी भी अपने को (स्वयं को) गुरु के रूप में घोषित नहीं किया और न ही कभी स्वयं पूजा करने का आदेश अपने शिष्यों व भक्तों को दिया।

उस समय माता-पिता, आचार्य ये सभी ज्ञान वितरण करते थे, जीवन का कल्याण पथ बताते थे, किन्तु सिवा सच्चे परमात्मा गुरु के स्वयं को कभी भी गुरु नहीं बताते थे। 'यह सब कुछ है, वह एकमात्र गुरु ईश्वर का ही है, हम केवल निमित्त मात्र हैं, ऐसा वे समझाते व बताते थे।

दोनों में अन्तर

	ईश्वर रूप गुरु		मनुष्य रूप गुरु (मार्ग दर्शक)
(1)	शरीर धारणकर्ता नहीं।	(1)	शरीर धारणकर्ता है।
(2)	सर्वज्ञ व सर्वव्यापक।	(2)	अल्पज्ञ व एकदेशी है।
(3)	सर्वशक्तिमान।	(3)	अल्पशक्तिमान है।
(4)	इसी से ज्ञान की उत्पत्ति	(4)	ज्ञान उत्पन्न नहीं कर सकता, ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
(5)	सृष्टि में नियम व व्यवस्था का निर्माण	(5)	नियम व व्यवस्था का निर्माण नहीं करता उसके अनुसार चलता है।
(6)	काल का बन्धन नहीं।	(6)	काल का बन्धन है।
(7)	यह सदैव गुरु (बड़ा) है।	(7)	सभी मनुष्य मार्गदर्शक हैं, गुरु नहीं।
(8)	न्याय देता है।	(8)	न्याय दे नहीं सकता।
(9)	कर्मों के फल देता है।	(9)	कर्मफल नहीं दे सकता, भोगता है।
(10)	संसार को देता रहता है। लेता नहीं।	(10)	दे नहीं सकता, लेकर देता है।
(11)	गलतियाँ नहीं हैं।	(11)	गलतियाँ होती हैं।
(12)	हमेशा ईमानदारी है।	(12)	बेईमान हो सकता है।
(13)	गलत राह कभी नहीं बताता।	(13)	गलत मार्गदर्शन कर सकता है।
(14)	गुरुत्व है, आकर्षण है।	(14)	दोनों बातें नहीं हैं।
(15)	आनन्द स्वरूप है।	(15)	आनन्द का भिखारी है।
(16)	किसी गुरु की आवश्यकता नहीं।	(16)	मार्गदर्शक, गुरु की आवश्यकता है।
(17)	एक ही है।	(17)	अनेक होते हैं।
(18)	अन्दर-बाहर की बातें जानता है।	(18)	यह जान नहीं सकता।
(19)	किसी का विश्वासघात नहीं होगा।	(19)	कृतघ्न भी हो सकता है, कृतघ्न मनुष्य विश्वासघात कर सकते हैं।
(20)	दुर्गुण, व्यसन से दूर व पवित्र हैं।	(20)	व्यसनी व दुराचारी हो सकते हैं।

इसीलिए वेदज्ञान का सर्वत्र प्रचार व प्रसार होता रहा। सारे संसार का मानव सुख, शांति, आनन्द व सन्तोष प्राप्त करते हुए अपना सर्वकल्याण कर लेता था। अतः ज्ञानमार्ग बताने वाला परमात्मा सच्चा गुरु रहा और वे मानवरूप सभी गुरु ऋषि-मुनि, माता-पिता, आचार्य व सत्यज्ञानी, प्रामाणिक आप्त लोग कहलाये गये।

समय-समय पर वेद के शाश्वत ज्ञान के प्रचार व प्रसार हेतु अलग-अलग रूप में प्रयत्न होते रहे। चातुर्मास की परम्परा का प्रचलन भी इसी का एक भाग था। इस माह में आदर्श दिनचर्या व सात्विक खान-पान रखकर वेदाध्ययन करने का प्रावधान था। गुरुपूर्णिमा का दिन भी सच्चे, पहले गुरु परमात्मा और उसकी वेदवाणी का स्वाध्याय करने, ईश्वर के उपकारों को स्मरण करने उसके उद्देश्य को समझने और वेदज्ञान के प्रचार के लिए योगदान देने व कर्तव्यकर्म करने के लिए था। गुरुपूर्णिमा मनाने की सार्थकता इसी में थी।

मनुष्यरूप गुरु का प्रामाणिक कर्तव्य यही है कि वे परमात्मा को ही गुरु समझने व उसके सान्निध्य में बैठने का उपदेश सामान्य लोगों को देवें। यह बात निश्चित है कि कोई भी मनुष्य ज्ञान की उत्पत्ति नहीं कर सकता। सृष्टि में विद्यमान परमात्मा की व्यवस्था व उसकी न्यायप्रणाली में कोई भी परिवर्तन कर नहीं सकता, वह तो निमित्त मात्र ही है। मनुष्य रूप गुरु भी यदि प्रामाणिक रहा, तो ही उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना उचित है, किन्तु यह भी सच्चे गुरुरूप परमात्मा को भूलकर कदापि नहीं।

आजकल योगविद्या तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में भी अनेक गुरु हैं, किन्तु इन सभी को भी ज्ञान कहाँ से आये?पतंजलि ऋषि ने योगशास्त्र की रचना की किन्तु उन्हें भी तो योगज्ञान वेद से ही मिला है। इसलिए प्रामाणिक मनुष्यरूप गुरु कभी भी सच्चे परमात्मा से, उसके ज्ञान से, उसकी व्यवस्था से, न्याय, वेदज्ञान आदि से मनुष्य को अलग नहीं कर सकते। पतंजलि ऋषि ने भी सच्चे गुरुरूप परमात्मा का निरूपण निम्नरूप से किया है -

'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषः ईश्वरः।' (योग. 1/24)

यहाँ पर परमात्मा को निराकार, क्लेशरहित, शरीररहित बताया है। चेतन में पुरुष भी हैं, किन्तु चेतनविशेष में जो हैं, वह परमात्मा है। इसके विपरीत मनुष्यों में जो श्रेष्ठ है, वह ईश्वर नहीं है।

'तत्रनिरतिशयंसर्वज्ञबीजम्।' (योग. 1/25)

परमात्मा सर्वज्ञ है, सब ज्ञान उसके द्वारा मिला है, और वह भी सर्वकाल में।

स एव पूर्वेषामपि गुरुः कालेनाऽनवच्छेदात् (योग 1/26) यहाँ पर पतंजलि ऋषि प्रामाणिक रूप से कहते हैं - सच्चा परमात्मा ही पहला गुरु है और वह भी काल से परे रहकर हमेशा के लिए

तस्य वाचकः प्रणवः। (योग 1/27) उस परमात्मा का निज नाम वाचक प्रणव अर्थात् ओ३म् है।

तज्जपस्तदर्थभावनम्। (योग 1/28) उस परमात्मागुरु के नाम का अर्थसहित जाप व उसके गुणों को याद सदैव करते हुए करना और उसी में अपनी भावना को लगाना।

देखिये गुरु को मानना, गुरु का नामस्मरण करना, गुरु के पास बैठना आदि बातों की संगति ईश्वर के साथ ही बैठती है। अतः गुरु पूर्णिमा के दिन सच्चे गुरु परमात्मा को ही मानकर तथा उसके अनुरूप कार्य करने वाले सत्पुरुषों को सम्मानित करना होगा।

जीवन का मूल कारण आत्मा है। उसने शरीर धारण किया है। यह अल्पज्ञ व अल्पशक्तिवाला है। सुख, शान्ति व आनन्द प्राप्त करना, यह उसकी इच्छा है। वह आत्मा सत् व चित्त है तथा परमात्मा सत्, चित्त व आनन्दस्वरूप है।

आत्मा को जो भी आनन्द प्राप्त करना है, वह ईश्वर के सान्निध्य के बिना नहीं मिल सकता। मनुष्यरूप गुरु कितना भी बड़ा हुआ, तो भी वह आत्मा को परमानन्द नहीं दे सकता। वह तो केवल और केवलमात्र ईश्वर के सान्निध्य में रहकर उसका श्रद्धापूर्वक ध्यान करने से ही मिलेगा और यह परमानन्द मिले बिना आत्मा का कल्याण कभी भी सम्भव नहीं है। ईश्वर रूप परम गुरु की भक्ति, उपासना, चिन्तन, स्मरण पूजा आदि करने से हम सबका कल्याण होता है, मनुष्य रूप गुरु पर यह बात कदापि नहीं उतरती।

इस मनुष्य को परमात्मा के ज्ञान व्यवस्था, न्याय व उद्देश्य को जानना पड़ता है। ईमानदारी से सत्य बताया गया तो ही उसका सर्वकल्याण व भला होगा अन्यथा निश्चय ही बुरा हो सकता है। यहाँ तक बताने तक माता-पिता आचार्य आदि को महत्त्व है, किन्तु वे गुरु नहीं हो सकते। क्योंकि ये सभी मनुष्यरूप मार्गदर्शक के रूप में जाने जा सकते हैं। गुरु में गुरुत्व होना चाहिए। गुरुत्व का मतलब महानता व दिव्यता! जिसकी ओर सदैव अन्य सभी का आकर्षण होता हो। विद्या, गुण, स्वभाव, आनन्द के लिए चेतन आत्मा का महाचेतन आत्मा की ओर स्वाभाविक आकर्षण है। इसलिए भी परमात्मा ही गुरु है। जीवन की सभी समस्याओं का उत्तर (हल) जिसने देकर रखा है, व्यवस्था की है, वह ही गुरु परमात्मा है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुसाक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।

इस श्लोक में भी ईश्वररूपी गुरु के प्रति ही बड़ी कृतज्ञता व्यक्त की गई है, मनुष्यरूप गुरु के लिए नहीं। मनुष्य न तो ज्ञान उत्पन्न कर सकता है और न ही व्यवस्था, न्याय गुणों का निर्माण कर सकता है।

इस संसार में मनुष्य रूप गुरु अपने शिष्यों को अपने साथ कृतज्ञ रहने का उपदेश देते हैं, परन्तु वे स्वयं परमात्मा से कृतघ्न होते हैं और शिष्यों को भी यही सिखाते हैं। मनुष्यरूपी मार्गदर्शक गुरु अपने शिष्यों, अनुचरों व छात्रों का मार्गदर्शन करता है। अपनी आत्मा में ज्ञानज्योति प्रज्ज्वलित करता है। उत्पन्न हुए इस ज्ञान को वह प्रयोग में लाता है, यह जो अगाध मिलता है, वह कहाँ से आता है?मनुष्यरूप गुरु या मार्गदर्शक से नहीं, बल्कि सर्वान्तर्यामी सच्चे गुरु परमात्मा द्वारा प्राप्त होता है। हम सभी की आत्मा में अच्छे काम करते समय उत्साह निर्भयता, शक्ति कौन भरता है?और बुरे काम करते समय भय, लज्जा, संकोच, निरूत्साह कौन प्रदान करता है?यह सब कुछ वह महागुरु ईश्वर ही करता है। इन सभी बातों से पता चलता है कि मनुष्य केवल मार्गदर्शक है। वह अच्छा या बुरा भी हो सकता है, किन्तु सर्वोच्च गुरु कभी भी बन नहीं सकता।

लोगों ने जैसे ईश्वर के स्थान पर अज्ञान, अविद्या के कारण देहधारी मनुष्य (अवतारवाद) को ईश्वर ही बना दिया, वैसे ही ईश्वररूपी गुरु के स्थान पर मनुष्यरूप गुरु बना दिये हैं। इसी कारण आज दुनिया त्रस्त है। ईमानदार लोगों का यह काम नहीं है। इस सृष्टि में सब ज्ञान परमात्मा का है, गुण भी उसी के ही हैं। देने वाला, न्याय करने वाला, कर्मफल आदि व्यवस्था चलाने वाला सब कुछ ईश्वर है, सारा संसार परमात्मा का है, तो मनुष्य का क्या है?क्योंकर वह ईश्वररूप परमगुरु का स्थान ले सकेगा?

जिन-जिन महापुरुषों में ईमानदारी व निरहंकारी वृत्ति है तथा वे कितने भी ज्ञानी, गुणी, महान परोपकारी, त्यागी, तपस्वी बनें, तो भी उन्होंने स्वयं को कभी भी महत्त्व देने की सोची नहीं। ये सभी अपनी अच्छाइयाँ परमात्मा की हैं, ऐसा ही बताया, किन्तु उन्हें भी अज्ञानी, स्वार्थी, एकांगी, शिष्यों व अनुयायियों ने गुरु बनाया और स्वयं को परमात्मा से अलग किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग के उच्च कोटि के वैदिक विद्वान, योग-ऋषि, तपस्वी, वेदादि आर्ष शास्त्रों के मर्मज्ञ, महान् धार्मिक, सुविवेकी, ईश्वरीय व्यवस्था को संसार में सर्वत्र सुप्रतिष्ठित करने वाले, सत्योपदेष्टा व महात्मा थे, उन्होंने अपना सर्वस्व मानवता के प्रसार व सर्वकल्याण हेतु लगाया। इतनी विशेषताएँ होते हुए भी उन्होंने स्पष्ट बताया कि 'मेरा कोई नया मत चलाने का लेशमात्र भी उद्देश्य नहीं है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त की ऋषिपरम्परा में परमपिता परमात्मा का जो सत्य, एकरस, अविरूद्ध वेदज्ञान है, उसे संसार के सामने रखना ही मेरा जीवन लक्ष्य है। सत्य और असत्य दोनों को सबके सम्मुख रखता हूँ। सत्य से शाश्वत सुख, सर्वहित व पूर्ण कल्याण होगा और इसके विपरीत असत्य से दुःख, अहित एवं अकल्याण होता है।'

अब प्रत्येक आत्मा की स्वतन्त्रता है कि जिसको जो लेना हो, वह ले लेवें। इसके लिए किसी पर कोई जबरदस्ती कर नहीं सकते, ऐसा उन्होंने स्पष्ट किया। स्वामी जी ने न किसी को अपना गुरु बनाया और न ही वे किसी के गुरु बनें। उन्होंने किसी को पूजापाठ करने या माला पहनाने का आग्रह नहीं किया। उन्होंने तो ईश्वर को ही सच्चे गुरु के रूप में ही बताया। इसी में ही दुनिया का कल्याण निहित है। व्यक्तिपूजा, व्यक्तिस्तोम को महत्त्व देने से ही सर्वनाश हुआ है और आज भी हो रहा है। प्रामाणिक प्रयत्नों से इन्हें रोकना अत्यावश्यक है। मनुष्य कितना भी बड़ा ज्ञानी, योगी बना, तो उसका ज्ञान व धन यह सबकुछ दूसरों से ही लिया हुआ है। इन सबको उसने दूसरों से ही धारण किया हुआ है। तो देने वाला महान है या लेने वाला?बाबा रामदेव, गुरु रविशंकर, सुधांशु महाराज, आशुतोष महाराज, आसाराम बापू आदि ये सभी मार्गदर्शक हैं, गुरु नहीं हैं।

सच्चा गुरु तो सदा सर्वदा सभी के लिए तीनों कालों में सबका एकरस, एक ही परमपिता परमात्मा है। उसी एकमात्र विभु ईश्वर की आज्ञापालन में, सान्निध्य में बैठकर आसन लगा ध्यानस्थ होने में और सच्ची भक्ति व उपासना करने में ही आत्मा का कल्याण हो सकता है तथा मोक्ष मिल सकता है। वस्तुतः सच्चे गुरु परमात्मा को छोड़कर न जाने हमने कितने गुरु उत्पन्न किये?इन स्वार्थी, मतलबी व अन्धगुरुओं व उनके चेलों ने हमारे समाज व राष्ट्र की जो दुर्गति की है, उसकी चर्चा हम क्या और कैसे करें?इनके झमेलों से दूर रहना ही अच्छा! इन गुरुओं की लीलाओं से राष्ट्र का उज्ज्वल चरित्र नष्ट-भ्रष्ट हो चुका है। अतः हे विश्व के विद्वानों! अभी तो होश में आओ, सच्चे गुरु को समझ लो, उसे जानो, पहचानों व मानों तथा उसी की सच्ची पूजा करो। उसी एकमात्र श्रेष्ठ परमात्मा गुरु के प्रति श्रद्धा से युक्त होकर ऋण व्यक्त करो। उसी की आज्ञा पालन करते हुए वेदज्ञान का प्रचार व प्रसार करो तथा संसार के सामने एक आदर्श महात्मा के रूप में स्वयं को स्थापित करो। वह एक, महान ईशगुरु हम सभी शिष्यों को सद्बुद्धि प्रदान करें, यही गुरुपूर्णिमा के अवसर पर कामना।

- आर्य समाज परली वै. जिला-बीड़ (महाराष्ट्र),
मो.:-09421951904

वैदिक गर्जना के जुलाई, 2013 से साभार

लिंगार्चन पामरपन है

इन वाममार्गियों और शैवों ने सम्मति करके भग–लिंग का स्थापन किया जिसको जलाधारी और लिंग कहते हैं और उसकी पूजा करने लगे। उन निर्लज्जों को तनिक भी लज्जा न आई कि यह पामरपन का काम हम क्यों करते हैं?किसी कवि ने कहा है – 'स्वार्थी दोषं न पश्यति' स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ सिद्धि करने में दुष्ट कामों को भी श्रेष्ठ मान दोष को नहीं देखते। – महर्षि दयानन्द सरस्वती

सम्माननीय विद्वानों तथा सुधी पाठकों की सेवा में

आत्म–निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक समूचे विश्व के आर्यजनों के लिए लोकप्रिय एवं मार्गदर्शक पत्र है कोटि–कोटि आर्य जनता की भावनायें इस पत्र के माध्यम से प्रेरित होती है। आर्यजनों की भावनाओं को और अधिक प्रेरित और उत्साहित करने के उद्देश्य से आर्य जगत के यशस्वी विद्वानों तथा सुधी पाठकों से राष्ट्रीय सामाजिक एवं धार्मिक विचारों से ओतप्रोत विचारोत्तेजक लेख तथा अन्य सामग्री सादर आमन्त्रित है। इसके साथ ही वैदिक सार्वदेशिक आपको कैसा लगता है तथा इसको और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायी बनाने के लिए आपके सुझाव तथा प्रतिक्रिया की भी प्रतीक्षा रहेगी। कृपया अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराते रहें। अपने लेख सुन्दर, स्पष्ट लिखकर अथवा टाइप करवाकर ई–मेल अथवा डाक द्वारा भेजें तथा अपना पूर्ण पता अवश्य लिखें। धन्यवाद।

– सम्पादक

मात्र हिन्दुत्व है संकटमोचक पथ?

—डॉ0 सुरेन्द्र सिंह कादियाण

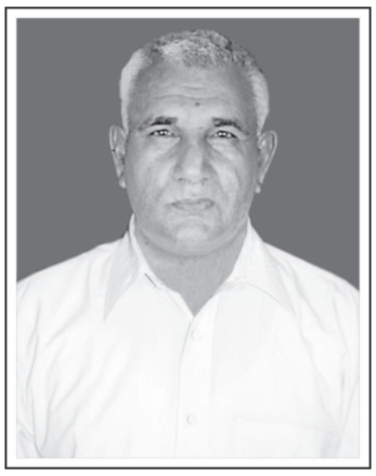

पटना में गुरू पूर्णिमा पर आयोजित एक समारोह को सम्बोधित करते हुए सरसंघ चालक डॉ. मोहन मधुकर भागवत ने कुछ ऐसी बातें कही हैं जो गम्भीर विश्लेषण और विवेचन की अपेक्षा रखती हैं। इससे पूर्व कि उनकी बातों पर टिप्पणी की जाये, उनको यहाँ उद्धृत करना आवश्यक है। 'दैनिक जागरण' (22 जुलाई, 2013) के मुखपृष्ठ पर ''संकट से मुक्ति का रास्ता सिर्फ हिन्दुत्व'' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित समाचार के मुख्य अंश इस प्रकार हैं—

क) '' भारत को संकट से छुटकारा दिलाने का एकमात्र रास्ता हिंदुत्व है जिसका मूल आधार 'सबका सम्मान व सबका कल्याण' है। अपने विविधतापूर्ण व विशाल देश का काम एक नायक से नहीं चलने वाला है। स्थानीय स्तर पर नायकत्व विकसित करना होगा।

ख) ''देश में बहुत कुछ अच्छा हुआ है, लेकिन बीते दो—तीन वर्षों में स्थितियाँ निराशाजनक हुई हैं। जनमानस हताश है। देश को आगे ले जाने की जिम्मेदारी निभाने में जो असफल हैं, उन्हें हटा दिया जाना चाहिए। देश को समृद्ध बनाने के लिए समाज में गुणवत्ता व एकता जरूरी है।

ग) ''रवींद्र नाथ टैगोर ने अपने एक लेख 'स्वदेशी समाज' में लिखा है कि परिवर्तन का आरम्भ राजनीति से नहीं, समाज से होता है। मात्र सत्ता बदल जाने से कुछ नहीं होता। अपना देश इतना बड़ा और विविधता पूर्ण है कि यहाँ एक नायक से काम नहीं चलने वाला। स्थानीय स्तर पर नायकत्व विकसित होना चाहिए। संघ का एकमात्र काम विपरीत परिस्थितियों में भी अच्छी राह चलने वाले स्वयंसेवकों का निर्माण करना है।

घ) ''बाहर से आने वालों को यहाँ की विविधता देख लगता है कि यहाँ कई देश एक साथ हैं। उनके मानस में हमारी संस्कृति की अवधारणा ही नहीं है, जबकि हमारी विविधता में ही एकता के सूत्र हैं। हमारी धरती हमारी आवश्यकता पूरी कर हमें अपने—अपने तरीके से जीने का अवसर देती है। यही वजह है कि हम तमाम देवी देवताओं विविध विश्वास और पूजा पद्धतियों के साथ सहिष्णुता से रह रहे हैं।

ङ) अंग्रेजों ने सोचा था कि हिंदू—मुसलमान लड़ते—लड़ते खत्म हो जायेंगे। यह सोच गलत थी। दोनों लड़ते—लड़ते साथ रहने का रास्ता निकाल लेंगे और यह रास्ता हिंदुत्व का रास्ता होगा। हिंदुत्व ही हिंदुस्तान और यहाँ रहने वालों की पहचान है। यह केवल देह पोषण की राह नहीं, बल्कि स्थानीय परिस्थितियों में विकसित विचार है।

''दैनिक जागरण'' में प्रकाशित इस समाचार का क्रम भंग न करते हुए उसे पांच भागों में विभाजित कर दिया है जिससे कि उन पर चिन्तन करने में सुविधा रहे। इसी दृष्टि से न हमने शब्दों को तोड़ा—मरोड़ा है और न ही शब्दों को घटाया—बढ़ाया है।

क) इस समूचे वक्तव्य को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरसंघ चालक डॉ0 मोहन मधुकर भागवत से हमारा पहला सवाल यह रहेगा कि जव वे विविधता में एकता की अवधारणा में विश्वास रखते हैं तो उन्होंने यह भ्रम क्यों पाल लिया है कि 'भारत को संकट से छुटकारा दिलाने का एकमात्र रास्ता हिंदुत्व है?हिंदुत्व के अतिरिक्त और रास्ते क्यों नहीं हो सकते?जहां तक इतिहास की मेरी जानकारी है संघ की स्थापना सन् 1925 में विजयदशमी के पर्व पर नागपुर में डॉ0 केशव वलिराम हेडगेवार ने की थी। इससे पूर्व वे कांग्रेस और हिन्दू महासभा में स्थापित होने की सम्भावनाएँ तलाश चुके थे लेकिन हताश व निराश हुए क्योंकि कांग्रेस का नेतृत्व तिलक ने महात्मा गाँधी को सौंप दिया था और हिन्दू महासभा में वीर सावरकर की तूती बोलती थी। इन दो दिग्गजों के समक्ष डॉ0 हेडगेवार न केवल गौण थे, बल्कि बौने भी थे। राष्ट्रीय स्तर पर उनकी कोई पहचान नहीं थी और न ही कांग्रेस व हिन्दू महासभा में उन्होंने कोई उल्लेखनीय कारनामा करके नाम कमाया था। माना जाता रहा है और ऐसा मानने के पुख्ता आधार भी हैं कि ब्रिटिश शासक उस समन कांग्रेस और हिन्दू महासभा से आक्रांत थे, भयभीत थे, सहमे हुए थे और उनको ऐसे व्यक्तियों व संगठनों की तलाश थी जो इन दोनों संगठनों की काट बन सकें, उन पर निरन्तर दबाव बना सकें। उनकी गति को अवरूद्ध कर सकें, उन्हें अपने लक्ष्य से भटकाके रख सकें और उनकी डुगडुगी पर जैसा वे चाहे वैसा वे नाच सकें। ब्रिटिश सत्ता को अपनी इस तलाश में दो व्यक्ति ऐसे मिले जो उनके मंसूबों को पूरा करने को तैयार थे, सक्षम नहीं थे। ये दो व्यक्ति थे मोहम्मद अली जिन्हां और डॉ0 केशव बलिराम हेडगेवार जिनमें से पहले ने मुस्लिम लीग की और दूसरे ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। जिन्हा को कांग्रेस को, और हेडगेवार को हिन्दू महासभा को नामशेष करने का कार्यभार सौंपा गया। चूँकि व्यक्तिशः दोनों इस कार्य के लिए सक्षम नहीं थे इसलिए अंग्रेजों ने इन्हें स्थापित करने, आगे बढ़ाने, सक्षम बनाने, प्रभावी बनाने व हस्तक्षेप करने के लिए न केवल नैतिक समर्थन दिया, पृष्ठभूमि तैयार की बल्कि उन्हें आर्थिक सहयोग व अन्य प्रकार का सहकार भी समय—समय पर दिया। अंग्रेजों ने यह काम इतनी चालाकी, मक्कारी, धूर्तता व शातिराना तरीके से किया था कि किसी को शक तक नहीं हुआ भनक तक नहीं मिली। इन दोनों संगठनों ने अंग्रेजों को अपने मंसूबे पूरे करने में समय—समय पर जो षडयन्त्र रचे, चालें चलीं, प्रस्ताव भेजे, कांग्रेस व हिन्दू महासभा का अधिमान गिराया, स्वाधीनता आन्दोलन में भटकाव पैदा किये उससे इसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि ब्रिटिश शासकों व संघ तथा मुस्लिम लीग में गहरी सांठगांठ थी, पारस्परिक तालमेल था, गुप्त सन्धि थी। ऐसे व्यक्ति और संगठन से क्या आशा रखी जा सकती है कि वह भारत को संकट से छुटकारा दिलाने का एकमात्र विकल्प 'हिन्दुत्व' को बना सके?

शेष अगले अंक में

उत्तम मार्ग पर चलने का सरल उपाय 'सन्मार्ग दर्शन'

लेखक – स्वामी सर्वदानन्द

सन्मार्ग दर्शन में आठ गति है। 1. नाम गति, 2. अर्थगति, 3. शरीर गति, 4. जीवगति, 5. संसारगति, 6. सामान्य गति, 7. सरलगति, 8. मान्यमति गति इनके अवान्तर अनेक भेद हैं, उनका दर्शन सूची में करें। इस ग्रन्थ में ईश्वर, जीव, बन्ध, मोक्ष, सृष्टि—उत्पत्ति, प्रलय, व्यवहार सम्बन्धी विचार पाठकों को मिलेंगे। हितोपदेश पर अधिक बल दिया गया है। पृष्ठ—465 है। मूल्य 250 प्रति है। डाक व्यय फ्री होगा।

मधुर प्रकाशन, 2804, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली—6, दूरभाष :—011—23238631

वैदिक सार्वदेशिक के आजीवन सदस्यों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, वैदिक संस्कृति का उद्घोषक पत्र ''वैदिक सार्वदेशिक'' पूरे विश्व में बसे करोड़ों आर्यजनों का लोकप्रिय एवं मार्ग दर्शक पत्र है। हमारा यह निरन्तर प्रयास रहता है कि इस पत्र के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमूल्य विचारों को जन-जन तक पहुँचाया जाये और मानव मात्र को संस्कारित कर ''सादा जीवन उच्च विचार'' की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाये। इस कार्य में हमें आप सबका सहयोग अपेक्षित है।

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आप 20 अथवा उससे अधिक वर्ष पूर्व सभा के मुख पत्र के 200 अथवा 250/- रुपये देकर आजीवन सदस्य बनें थे और तब से लेकर निरन्तर आपको यह पत्र नियमित रूप से भेजा जा रहा है। आपको ज्ञात है कि इस मँहगाई के युग में पत्रिका का प्रकाशन कितना कठिन हो गया है। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि ''वैदिक सार्वदेशिक का आजीवन सदस्यता शुल्क जो मात्र 2500/- रुपये है। इसे आप सार्वदेशिक सभा के सहयोगार्थ एकबार पुनः आजीवन सदस्यता के रूप में भेजने का कष्ट करें जो महानुभाव पुराने आजीवन सदस्य हैं उनके लिए विशेष शुल्क मात्र 2000/- रुपये निर्धारित किया गया है जिसे भेजकर कृतार्थ करें। आपका यह सहयोग महर्षि की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में जहाँ आपको सहयोगी बनायेगा वहीं हमें सम्बल भी प्रदान करेगा।

– सम्पादक

Real story of American Dollar v/s Indian Rupee

- Radhika and Manu Singh

An Advice to all who are worrying about fall of Indian Rupee

Throughout the country please stop using cars except for emergency for only seven days (Just 7 days)

Definitely Dollar rate will come down. This is true. The value to dollar is given by petrol only.This is called Derivative Trading. America has stopped valuing its Dollar with Gold 70 years ago.

Americans understood that Petrol is equally valuable as Gold so they made Agreement with all the Middle East countries to sell petrol in Dollars only. That is why Americans print their Dollar as legal tender for debts. This mean if you don't like their American Dollar and go to their Governor and ask for repayment in form of Gold,as in India they won't give you Gold.

You observe Indian Rupee, " I promise to pay the bearer..." is clearly printed along with the signature of Reserve Bank Governor. This mean, if you don't like Indian Rupee and ask for repayment,Reserve Bank of India will pay you back an equal value of gold.(Actually there may be minor differences in the Transaction dealing rules, but for easy comprehension I am explaining this)

Let us see an example. Indian petroleum minister goes to Middle East country to purchase petrol, the Middle East petrol bunk people will say that liter petrol is one Dollar.

But Indians won't have dollars. They have Indian Rupees. So what to do now? So That Indian Minister will ask America to give Dollars. American Federal Reserve will take a white paper , print Dollars on it and give it to the Indian Minister. Like this we get dollars , pay it to petrol bunks and buy petrol.

But there is a fraud here. If you change your mind and want to give back the Dollars to America we can't demand them to pay Gold in return for the Dollars. They will say " Have we promised to return something back to you? Haven't you checked the Dollar ? We clearly printed on the Dollar that it is Debt"

So, Americans don't need any Gold with them to print Dollars. They will print Dollars on white papers as they like.

But what will Americans give to the Middle East countries for selling petrol in Dollars only?

Middle East kings pay rent to America for protecting their kings and heirs. Similarly they are still paying back the Debt to America for constructing Roads and Buildings in their countries. This is the value of American Dollar. That is why Many say some day the Dollar will be destroyed.

At present the problem of India is the result of buying those American Dollars. American white papers are equal to Indian Gold. So if we reduce the consumption of petrol and cars, Dollar will come down

And here is a small thing other than petrol , what we can do to our Indian Rupee

YOU CAN MAKE A HUGE DIFFERENCE TO THE INDIAN ECONOMY BY FOLLOWING FEW SIMPLE STEPS:-

Please spare a couple of minutes here for the sake of India.

Here's a small example:-

At 2008 August month 1 US $ = INR Rs 39.40

At 2013 August now 1 $ = INR Rs 62

Do you think US Economy is booming? No, but Indian Economy is Going Down.

Our economy is in your hands.INDIAN economy is in a crisis. Our country like many other ASIAN countries, is undergoing a severe economic crunch. Many INDIAN industries are closing down. The INDIAN economy is in a crisis and if we do not take proper steps to control those, we will be in a critical situation. More than 30,000 crore rupees of foreign exchange are being siphoned out of our country on products such as cosmetics, snacks, tea, beverages, etc. which are grown, produced and consumed here.

A cold drink that costs only 70 / 80 paise to produce, is sold for Rs.9 and a major chunk of profits from these are sent abroad. This is a serious drain on INDIAN economy. We have nothing against Multinational companies, but to protect our own interest we request everybody to use INDIAN products only at least for the next two years. With the rise in petrol prices, if we do not do this, the Rupee will devalue further and we will end up paying much more for the same products in the near future.

What you can do about it?

Buy only products manufactured by WHOLLY INDIAN COMPANIES.Each individual should become a leader for this awareness. This is the only way to save our country from severe economic crisis. You don't need to give-up your lifestyle. You just need to choose an alternate product.

Daily products which are COLD DRINKS,BATHING SOAP ,TOOTH PASTE,TOOTH BRUSH ,SHAVING CREAM,BLADE, TALCUM POWDER ,MILK POWDER ,SHAMPOO , Food Items etc. all you need to do is buy Indian Goods and Make sure Indian rupee is not crossing

outside India.

Every INDIAN product you buy makes a big difference. It saves INDIA. Let us take a firm decision today.

We are not anti-multinational. we are trying to save our nation. every day is a struggle for a real freedom. we achieved our independence after losing many lives.

They died painfully to ensure that we live peacefully. the current trend is very threatening.

Multinationals call it globalization of indian economy. for indians like you and me, it is re-colonization of india. the colonist's left india then. but this time, they will make sure they don't make any mistakes.

Russia, s.korea, mexico - the list is very long!! let us learn from their experience and from our history. let us do the duty of every true indian. finally, it's obvious that you can't give up all of the items mentioned above. so give up at least one item for the sake of our country!

e-mail :- tomanuji@gmail.com

प्राचीन शास्त्रों में मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं

देखो, जैमिनी ने मीमांसा में सब कर्मकाण्ड, पतंजलि मुनि ने योगशास्त्र में सब उपासनाकाण्ड और व्यास मुनि ने शारीरिक सूत्रों में सब ज्ञानकाण्ड वेदानुकूल लिखा है। उनमें पाषाणादि मूर्तिपूजा वा प्रयागादि तीर्थों का नाम तक नहीं लिखा। लिखे कहाँ से?जो कहीं वेदों में होता तो लिखे बिना कभी न छोड़ते। इसलिए लुप्त शाखाओं में भी इस मूर्तिपूजादि का प्रमाण नहीं था।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

धर्म की दीवार में औरतें

– *आर. एल. फ्रांसिस*

हर साल महिला असुरक्षा को लेकर 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' पर जोरदार भाषण होते हैं। वहीं महिला अस्मिता को लेकर सरकारें भी लंबे-चौड़े वायदे कर अपनी दरयादिली दिखाने में पीछे नहीं रहती। तमाम कोशिशों और कानूनों के बावजूद इस बात को लेकर आशंका बनी रहती है कि घर के अंदर और बाहर महिलाओं की स्थिति में कोई बड़ा फर्क आयेगा। यह सब इसलिए है क्योंकि महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा बहुत जटिल है और यह तभी हल होगा, जब हम समाज और परम्परा से लेकर कानून व्यवस्था की जड़ता को खत्म नहीं कर लेते।

यह शायद टूट भी जाए लेकिन उन करोड़ों महिलाओं का क्या होगा, जो धार्मिक रीति-रिवाजों और परम्पराओं की एक अटूट डोर से बंधी हुई हैं और सात पर्दों में ढके हुए उनके जीवन पर कोई चर्चा ही नहीं करना चाहता। ऐसी महिलाओं की संख्या दुनिया में लाखों में है। कहीं वह छोटे धार्मिक समूहों में है और कहीं कैथोलिक चर्च की विशाल व्यवस्था में। उनमें से अधिकतर के सामने गंभीर चुनौतियाँ हैं। ऐसी व्यवस्था में उनके लिए अंदर जाने का रास्ता तो होता है लेकिन बाहर आने के सभी दरवाजे बन्द कर दिए गए हैं। इस कारण ज्यादातर मानसिक बीमारियों की जकड़न में है।

चार साल पहले केरल की एक कैथोलिक नन सिस्टर जेस्मी की आत्मकथा 'आमीन' ने कैथोलिक चर्च के दमघोंटू माहौल और धर्म के आडंबर की आड़ में जारी दुराचारों को समाज के सामने लाने का काम किया। तीन साल पहले केरल, के कोल्लम जिले की एक कैथोलिक नन अनुपमा मैरी की आत्महत्या ने चर्च की कार्यप्रणाली पर ढेरों सवाल खड़े कर दिये थे। इसके पहले सिस्टर अभया ने भी अनुपा मैरी वाला रास्ता चुना था और इन दोनों की लाशें कान्वेंट में ही पाई गई थीं।

अनुपा मैरी ने अपने सुसाइड नोट में साफ लिखा था कि उसे यह रास्ता इसलिए अपनाना पड़ा क्योंकि कान्वेंट में उसका मानसिक उत्पीड़न किया जा रहा था। नन के पिता ने चर्च व्यवस्था पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा था कि उसकी पुत्री का यौन शोषण किया जा रहा था और उसने अपनी तकलीफ को अपनी माँ और बहन के साथ साझा किया था।

केरल के कन्नूर जिले की एक और नन सिस्टर मैरी चांडी ने 'स्वास्ति' नामक आत्मकथा लिखकर चर्च के अंदर घुट-घुट कर मरती ननों पर बहस को आगे बढ़ाने का काम किया है। सिस्टर मैरी चांडी ने बंद दरवाजों के अंदर यौन कुंठाओं के शिकार अपने ही सहयोगी पादरियों तथा अन्य अधिकारियों के व्यवहारों की व्याख्या के साथ देह की पवित्रता बनाए रखने के नाम पर ननों के लिए गढ़े गए आडम्बरों की पोल खोल दी है।

यह दोनों महिलाएँ 52 साल की सिस्टर जेस्मी और 67 साल की सिस्टर मैरी चांडी कोई साधारण महिलाएँ नहीं हैं। वह पिछले तीस वर्षों से कैथोलिक चर्च के विभिन्न संस्थाओं में अवैतनिक सेवा कर रही है। सिस्टर जेस्मी अंग्रेजी साहित्य में परास्नातक हैं और अगस्त, 2008 तक वह त्रिसूर में चर्च द्वारा चलाए जाने वाले एक कॉलेज की प्राचार्या थीं। तीन दशक तक चर्च की सेवा करने के बाद उन्होंने चर्च के अन्दर ननों के साथ होने वाले अनाचार का राज खोलने का साहस दिखाया है।

हाल ही में आयरलैंड में गर्भपात को लेकर एक बहस दुनिया भर में चली और बंद भी हो गई। क्योंकि वेटिकन कैथोलिक चर्च ने इसमें कोई छूट देने से मना कर दिया क्योंकि चर्च नहीं चाहता कि धार्मिक कायदे-कानूनों में कोई बदलाव किया जाए। जहाँ तक कैथोलिक ननों का सवाल है तो खुद पोप भी मानते हैं कि दस में से एक नन मानसिक रूप से परेशान होती है और उसे इलाज की जरूरत है।

व्यवस्था के विरूद्ध आवाज उठाने वालों को रिट्रीट सेन्टर में भेजने और पागल करार देकर इलाज के नाम पर एक अंतहीन शोषण का सिलसिला शुरू किया जाता है (इनमें पादरी और नन दोनों होते हैं), जहाँ उनकी मर्जी के विरूद्ध जबरदस्ती उनका इलाज किया जाता है, जो एक नर्क से कम नहीं होता।

ऐसे मामले यह दर्शाते हैं कि धर्म की आड़ में बहुत कुछ ऐसा चल रहा है, जिसे

अनुपा मैरी ने अपने सुसाइड नोट में साफ लिखा था कि उसे यह रास्ता इसलिए अपनाना पड़ा क्योंकि कान्वेंट में उसका मानसिक उत्पीड़न किया जा रहा था। नन के पिता ने चर्च व्यवस्था पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा था कि उसकी पुत्री का यौन शोषण किया जा रहा था और उसने अपनी तकलीफ को अपनी माँ और बहन के साथ साझा किया था।

उत्पीड़न की हद भी कहा जा सकता है लेकिन इसमें पीड़ितों की सुनवाई कहीं नहीं है। उम्मीद की जानी चाहिए कि दूसरों को मानवाधिकार का पाठ पढ़ाने वाले खुद भी इन्हें अपने काम के तरीकों में अपनायेंगे। देश में केरल ही एक ऐसा राज्य है, जहाँ से सबसे ज्यादा नन और पादरी आते हैं। एक लाख चालीस हजार ननों में से हर तीसरी नन केरल से आती हैं। ऐसे ही आंकड़े पादरियों के बारे में भी मिलते हैं।

वेटिकन के एक अधययन के मुताबिक सैमनरियों में पादरी तथा नन बनने के दौरान दस में से केवल चार पुरुष ही इस पेशे में टिक पाते हैं तथा बाकी अपने स्वाभाविक जीवन में लौट जाते हैं जबकि महिलाएँ बहुत कम संख्या में वापिस लौट पाती हैं। इसकी वजह यह है कि महिलाओं पर पारिवारिक और सामाजिक दबाव बहुत ज्यादा होता है, इसलिए वह चाहकर भी वापिस नहीं लौट पातीं। केरल के कुछ चर्च सुधार समर्थक ईसाइयों की तरफ से कुछ साल पहले राज्य महिला आयोग से माँग की गई कि नन बनने की न्यूनतम आयु तय की जाए क्योंकि विश्वासी परिवार छोटी बच्चियों को ही नन बनने के लिए भेज देते हैं, जबकि वह खुद फैसला लेने में सक्षम नहीं होतीं।

नन बन चुकी लड़कियों का पारिवारिक सम्पत्ति में अधिकार नहीं रहता। एक तरह से वह परिवारों से बेदखल कर दी जाती हैं। आयोग ने उस समय की वाम-मोर्चा सरकार से कई सिफारिशें की। आयोग ने कहा कि जो माँ-बाप अपनी बेटी को नन बनने के लिए मजबूर करते हैं, उन पर कानूनी कार्रवाही की जानी चाहिए। ननों की सम्पत्ति से बेदखली रोकी जानी चाहिए, अगर कोई नन वापिस लौटना चाहें तो उसके पुनर्वास की व्यवस्था की जानी चाहिए।

आयोग ने सरकार से सिफारिश की कि वह एक जाँच करवाये, जिसमें यह पता चल सके कि कितनी नाबालिक बच्चियों को नन बनने के लिए बाध्य किया गया और कितनी ननें ऐसी हैं, जो सामाजिक जीवन में लौटना चाहती हैं। लेकिन चर्च के दबाव में किसी भी सरकार ने इस मामले में दखल देना जरूरी नहीं समझा।

चर्च के अधिकारियों ने केरल महिला आयोग के सुझावों को गैरजरूरी तथा अपने धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप करार देते हुए कहा कि यह केवल सुझाव है और इसे मानने या न मानने के लिए हम आजाद हैं। धर्मसम्मत नियम उन ननों पर 'दया दिखाने' को कहता है, जो नन होने का परित्याग कर चुकी हों। अध्ययन बताते हैं कि एक चौथाई से भी ज्यादा ननें अपने धार्मिक जीवन से असंतुष्ट हैं।

कार्डिनल वार्की विथायथिल ने अपनी जीवनी 'स्ट्रेट फ्रॉम द हार्ट आई' में माना है कि ननें जिन 'दयनीय परिस्थितियों में रहती हैं,' अब उन्हें उससे मुक्त करने का समय आ गया है। मेरा मानना है कि हमारी ननें काफी हद तक आजाद स्त्रियाँ नहीं हैं।' वैसे महिलाओं को न्याय देने में आनाकानी करने में केवल चर्च ही नहीं, दूसरे धार्मिक संस्थानों का रूख भी वैसा ही है और इन पर भी बात करने की जरूरत है।

– 'युवा संवाद' अगस्त अंक से साभार

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

मानवीय स्वर के प्रणेता 'संत रविदास'

– डॉ. मुकेश कुमार अरोड़ा

भक्ति की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितना कि आदिम मनुष्य। ''जब संसार में कार्ल मार्क्स नहीं था, जब संसार में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का चिन्तन नहीं था, तब भी मनुष्य अन्याय के विरूद्ध लड़ता था और यह संघर्ष मध्यकाल के सन्तों में हमें दिखाई देता है। .... वे सब निम्न जातियों की मुक्ति के लिए उठे हुए स्वर थे। यह स्वर मानवता का स्वर था और भारत में भी वैष्णव चिन्तन इसका मूल था जिसने सबमें समन्वय फैलाने का यत्न किया।'' जाति से चमार होने के बावजूद भी रैदास जी ने भक्ति मार्ग के जरिए मानवीय चेतना को सामने रखा। यही कारण है कि ''उनके समकालीन एवं गुरु भाई सन्त कबीर जी ने रविदास जी को सन्तन में रविदास सन्त हैं' कहकर इसी तथ्य को स्पष्ट किया है। सन्त कबीर का ही यह वचन –

निरवैरी निहकामंता, सांई सैती नेह।

बिषियाँ सूं न्यारा रहे, संतन का अंग एह।।

संत रविदास जी पर अक्षरश: चरितार्थ होता है।

प्रकारान्तर से सभी संतों ने समाज कल्याण की मान्यता को स्वीकार किया था और अपने जीवन के आदर्शों तथा पथ में इसे उतारा था। कबीर ने भी अपनी वाणी का विस्तार समाज कल्याण के लिए किया था। संत चरणदास ने अपने गुरु के विचारों की श्रोतस्विनी जगत् की प्यास बुझाने के लिए प्रवाहित की थी। अस्तु, रैदास ने तत्कालीन समाज की पीड़ा को समझा था और व्यवहारिक रूप से उसका समाधान निकाल कर अपनी वाणी के माध्यम से उस समाधान को सामान्य जनता में प्रसारित किया। ''रविदास जी स्वभावत: मानवतावादी थे। आजकल के समाजसुधारकों की तरह प्रचारक नहीं थे। उन्होंने अनेक पदों में अपनी शोषित और दलित जाति को याद किया है। वे प्रभु–पारायण, जातीयता के कट्टर विरोधी, मानव समानता के उदारवादी संत थे।''

उन्होंने कहा है ऊँचे कुल में जन्म लेने से मानव ऊँचा नहीं होता। अच्छे कर्म करने से ही ऊँचा होता है। ''उन्होंने स्वयं को बार–बार चमार कहा है। यह उनकी महानता का परिणाम है क्योंकि इष्ट के प्रति दीनता और विनम्रता से ही भक्ति का प्रसाद प्राप्त होता है।''

वर्तमान समय में संत रविदास के काव्य की मानवीय प्रासंगिकता एक दूसरे रूप में भी हमारे सामने आती है। ''कुछ मूल्य ऐसे होते हैं जो काल एवं स्थान से परे होते हैं। वे सदैव अनुकरणीय हैं। ऐसे मूल्यों को शाश्वत मूल्य कहते हैं। सत्य एक शाश्वत मूल्य है। कला शाश्वत मूल्यों की अभिव्यक्ति करता है और समाज में उनका प्रसार करता है। सामाजिक नियन्त्रण शाश्वत मूल्यों पर आधारित रहता है .... इस शाश्वत मूल्य से मानव व्यवहार सदैव से संचालित एवं प्रमाणित होता चला आया है। मानवीय शाश्वतता की महागाथा रचने वाले संत रैदास की वाणी में परिस्थितिजन्य अनुभव कूट–कूट कर भरा हुआ है। यही कारण है कि संत रैदास आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस युग में थे।

संत रैदास में समाज को सुधारने की चेष्टा दूसरे ढंग से सामने आती है। वे कबीर की तरह आक्रामक वाणी से सुधार लाने की बात नहीं करते। वे अपनी वाणी में अत्यन्त विनम्रता से मनुष्य के मन की उस वृत्ति का परिष्कार करना चाहते हैं जिसके चलते कुरीतियाँ उत्पन्न होती हैं। वे बार–बार स्वयं को चमार कहकर अपनी वस्तुस्थिति से मुँह नहीं मोड़ते।

''मेरी जाति कमीनी,

पाति कमीनी ओछा जनमु हमारा।

तुम सरणागति राजा रामचंद

कहि रविदास चमारा।।

संत रविदास की वाणी में कहीं आक्रोश या बदले की भावना नहीं झलकती। इन विभाजक रेखाओं को पाटने के लिए उन्होंने सहज रास्ता अपनाया।

''रविदास राति न सोईये,

दिवस न करिये स्वाद

अह निस हरि जी सुभारिये,

छोड़ि सकल प्रतिवाद।''

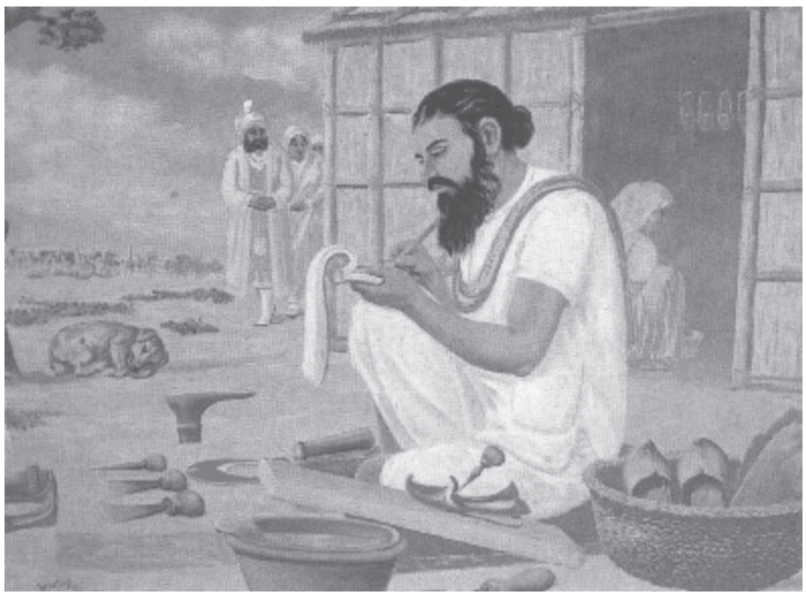

उनकी महानता को देखते हुए परमसंत राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि, ***''रविदास जी ने अपने आप को मिटा कर दूसरों को जीवन दान देना सिखाया था। मानवता के कल्याण के लिए स्वयं को कष्टों की भट्टी में जलाना रविदास जी का ही काम था। रविदास जी की प्रभु भक्ति की तड़प हरिजनों के लिए प्रभु के मन्दिर के द्वार खुलवाने में थी। रविदास जी की अमृत रस से भरी हुई वाणी जहाँ तपते हुए हृदयों को शीतल करने का काम देती है, वहीं वही वाणी प्राणिमात्र के लिए समानता और बराबरी के द्वार खोलने वाली हैं।***

रविदास ने तत्कालीन समाज में फैले आडम्बरों व कर्मकाण्डों का खुलकर विरोध किया। भले ही उनका स्वर कबीर की तरह प्रहारात्मक नहीं है। तथापि वे मिथ्याचारी व आडम्बरों का निर्वाह करने वालों को पूर्णतया अस्वीकार करते हुए उनके जीवन को व्यर्थ व थोथा कहते हैं तथा नाम स्मरण को ही जीवन का सार मानते हैं –

''थोथी काया थोथी माया, थोथा हरि बिन जनम गवाया।।

थोथा पंडित थोथा बानी, थोथी हरि बिन सबै कहानी।।

थोथा मंदिर भोग बिलासा, थोथी आन देव की आसा।

साचा सुमरन नांव बिसासा, मन बच कर्म कहै रविदासा।।''

उन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से मध्यकालीन सामाजिक चेतना को एक नई दिशा दी तथा अपने उच्च व सात्विक विचारों व उदात्त मूल्यों से तत्कालीन समाज को एक नया आलोक प्रदान किया। हर दृष्टिकोण से रैदास की वाणी में निहित मानवीय मूल्य प्रासंगिक हैं।

''चौरह सौ तैंतीस की मादा खुदी पंदरास।

दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री रविदास।।''

रविदास की भक्ति में मानव व्यवहार के सम्बन्धों की व्याख्या 'समाज' के सम्बन्ध में हुई है। डॉ. योगेन्द्र सिंह लिखते हैं, ''रैदास जी की विचारधारा आज भी प्रचलित सामाजिक अन्तर्विरोधों एवं समस्याओं का समाधान निकालने में एक सीमा तक सहयोग दे सकती है। विशेषत: उनका जीवन, विचारधारा तथा अभिव्यक्ति शैली यदि आज के परिप्रेक्ष्य में समझी जाये तो आजकल के समाज सुधारकों एवं अग्रणी व्यक्तियों के प्रति वह पर्याप्त मार्गदर्शक बन सकती है। इन्हीं विशेषताओं ने उनको अपने युग का ही नहीं सदा सर्वदा के लिए एक महान् विचारक, चिन्तक तथा समाज सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

सही मायने में देखें तो संत रैदास समूची मानवता के प्रणेता बनकर उभरे हैं। वे दिखावा पसंद नहीं करते बल्कि नाम स्मरण के बाहरी धरातल पर नाम और नामी की एकता स्थापित करते हैं, अर्थात् पद और पदार्थ का ऐक्य घोषित करते हैं। पद और पदार्थ की एकता का आधार है प्रत्यय यानी विश्वास। रविदास इसी विश्वास की प्रतिष्ठा अन्धविश्वास के उच्छेद से करते हैं –

''जहं अन्ध बिस्वास है, सत्त परख तहं नांहि।

'रविदास' सत्त सोई जानि है, जो अनभउ होई मन मांहि।।''

एकमेक एक रस का विवेचन करते हुए वे कहते हैं –

''धरम अधरम मोच्छ नहिं बंधन, जरा मरन भव नासा।

द्रिस्टि अद्रिस्टि गेय अरु ज्ञाता, एकमेक है रविदासा।।''

अस्तु, रविदास की वाणी में मानवता का स्वर एकता के रूप में, भक्ति के रूप में, समाजोत्थान और कल्याण भावना के रूप में उभरा है। उनकी अमृतवाणी हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। वह सत्य सनातन धर्म की एक ऐसी अनुपम थाति है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं।

– हिन्दी विभाग अध्यक्ष व शोध केन्द्र संयोजक, एस. सी. डी., राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना

'विश्वज्योति' से साभार

''स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी समारोह''

आर्य समाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर में तर्क–शिरोमणि महान शास्त्रार्थ महारथी एवं अनेकों गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का निर्वाण शताब्दी समारोह धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। प्रात: ब्रह्मयज्ञ के देवयज्ञ विदुषी बहन प्रियंका आर्य के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञ के यज्ञमान वीरेन्द्र सिंह आर्य सपत्नीक रहे। स्वामी योगानन्द सरस्वती ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में बताया कि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का जन्म माघ कृष्ण दशमी सम्वत् 1918 वि. को पंजाब प्रान्त जिला लुधियाना के ग्राम जगरावाँ में पण्डित राम प्रताप शर्मा के यहाँ हुआ था। माता–पिता ने उनका नाम कृपाराम रखा था। बाद में संन्यास ग्रहण कर वे दर्शनानन्द नाम से विख्यात हुए। इं. करण सिंह जी ने बताया कि स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की शिष्य परम्परा वैसे तो काफी लम्बी है परन्तु उनके शिष्य आकाश में तीन कान्तिमान नक्षत्र – (1) पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय उन्हीं के व्याख्यान सुनकर दर्शन विषय के विश्वप्रसिद्ध विद्वान बन गये, (2) महान शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी आर्य जगत को उन्हीं की देन थे, (3) आचार्य उदयवीर शास्त्री आधुनिक काल के ऐसे एकमेव विश्वप्रसिद्ध दार्शनिक हैं जिनके दर्शनों का अनेक बार प्रकाशन हुआ। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती व कुंअर सुखपाल आर्य प्रभाकर तथा चन्द्रसैन मलिक जी ने भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री कस्तूर सिंह स्नेही जी ने बताया कि स्वामी दर्शनानन्द जी ने हमारे जनपद में ग्राम बिरालसी व ग्राम बनत में भी दो गुरुकुलों की स्थापना की थी तथा सन् 1905 ईस्वी में वे नगर के शहर आर्य समाज में ठहरे थे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए आर. पी. शर्मा ने कहा कि विधर्मियों–विरोधियों को झकझोर कर वैदिक सिद्धान्तों का लोहा मनवाने वाले महान दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के पास आर्य जगत में न कोई पद था न ही वे कोई नेता थे, परन्तु उनका व्यक्तित्व व कृर्तत्व ऐसा अनुपम था कि वे इतिहास में अमर हो गये और आज हम और आप उनकी निर्वाण शताब्दी मनाकर कृतकृत्य हो रहे हैं। *– आर. पी. शर्मा*

मन्त्री, आर्य समाज, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

अंधविश्वास फैलाने में मीडिया जिम्मेदार हम खुद भी जिम्मेदार

– आशिमा

अभी खबरें खत्म हुई ही थीं और न्यूज चैनल ने अपने शाम के प्रोग्राम का प्रोमो दिखाया 'देखिये आज शाम हमारी स्पेशल रिपोर्ट कि कैसे इस गांव में लोग आस्था के नाम पर अंधविश्वास में डूबे हुए हैं।' और फिर आया एक विज्ञापन, 'देखिये, इन बाबा की असीम कृपा आज शाम इतने बजे, बाबा को अपने जीवन के संकट को बताने के लिए डायल कीजिए ये नंबर या फिर एसएमएस करें।' दोनों ही वीडियो देखकर एक प्रकार की विरोधाभासी छवि उभरी, और सबसे बड़ी बात यह कि ये दोनों ही विज्ञापन एक 'न्यूज चैनल' पर प्रसारित हो रहे थे। और हां, सही पहचाना ये वही जाने पहचाने बाबा हैं, जिनकी महिमा अजीब-अजीब समाधानों में उजागर होती है। गोलगप्पे खाना शुरू कर दो कृपा बन जाएगी। काला बैग ले लो, बाल ऐसे नहीं ऐसे कटवाओ, यहां तक कि समोसे के साथ लाल नहीं हरी रंग की चटनी खाओ, उससे भी कृपा बनना शुरूहो जाएगी। बीते समय इसी बाबा की धोखाधाड़ी की खबरें सामने आई थीं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स से लेकर अखबारों तक इन बाबाजी के बारे में पढ़ा जा सकता था।

दुख की बात यह है कि अब एक बार फिर से इन बाबा की महिमा खबरों के अच्छे चैनलों पर गाई जाने लगी है। पूछा जाना चाहिए कि आखिर इन 'खबरों' के चैनलों को कैसी अनुभूति होती है, जब नासमझ लोग अपनी जिंदगी की समस्याएं रो-रो कर बाबा के सामने रखते हैं, जिनका और हजार व्यावहारिक तरीकों से समाधान हो सकता है। साथ ही ऐसे रूदन और खुशी को ये खबरों वाले चैनल बड़ी विश्वसनीयता के साथ दिखाते हैं। ये 'वहम का बाजार' भी फायदे का सौदा साबित होने लगा है। धीरे-धीरे इनका बिजनेस टेक्नोलॉजी की सहायता से सैकड़ों करोड़ में तब्दील होता जा रहा है।

विरोधाभास की स्थिति और अधिक तब हो जाती है, जब इन्हीं चैनलों के संपादक शाम को अपने चैनलों पर बहस के दौरान दुनिया-जहान का ज्ञान बांटते हैं और भ्रष्टाचार से लेकर अन्य तमाम सामाजिक बुराइयों पर खेद जताते हैं। वैसे भी हर वक्त सच्ची खबरें पेश करने वाले पढ़े-लिखे लोगों के खबरिया चैनल खुद इनका साथ नहीं देते तो बाबा पर खुद कृपा नहीं बरसती और वक्त रहते दोनों एक-दूसरे पर कृपा बरसाने लगे। अगर यह कहा जाए कि इस बाबा की धोखाधड़ी का आधा जिम्मेदार मीडिया है तो गलत नहीं होगा। सबसे पहली बात कि इन सबसे मीडिया की मति पर सवाल उठता है कि क्या मीडिया वाकई पढ़े-लिखे लोगों का समूह है,जहां टीआरपी के चक्कर में कई संजीदा मुद्दे नजरअंदाज कर दिए जाते हैं, मगर दूसरी ओर बाबाओं के कार्यक्रमों को पूरा-पूरा समय दिया जाता है।

क्या 24 घंटों के इस समय में पूरी दुनिया की खबरें खत्म हो जाती हैं कि बाबाओं के लिए इतना फ्री स्पेस बच जाता है इनके पास?इन बाबा की तो बात ही क्या, यह वही मीडिया है, जिसके तकरीबन हर चैनल पर सुबह और शाम कोई न कोई बाबा आ जाता है भविष्य बताकर जनता का उद्धार करने। इन्हीं चैनलों पर कई तरह के घर में खुशियां लाने वाली किताबों के विज्ञापन धड़ल्ले से दिखाए जाते हैं।

क्या यह वही भारतीय मीडिया है, जिसने देश की आजादी में एक बहुत बड़ा योगदान दिया था, जिसके नि:स्वार्थ पत्रकारों का दो वक्त का संघर्ष सिर्फ इसी बात के लिए रहता था कि कैसे भारतीय जनता को सामाजिक कुरीतियों से स्वतंत्र किया जाए और नए भारत का निर्माण किया जाए। मगर आज के ज्यादा पढ़े-लिखे और टेक्नोनॉजी फ्रेंडली पत्रकार-समाचार प्रस्तोताओं को ऐसे ही तमाम बाबाओं के साथ बैठकर प्रोग्राम प्रसारित करते देखा जा सकता है। समाज के हित के नजरिये से मुझे अचंभा होता है कि इन बाबाओं ने अब तक देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए किसी तरह का समाधान नहीं ईजाद किया।

आज जो भारत अपने आप को हाईटेक और आधुनिक बता रहा है, वहां मीडिया क्या लोगों में फिर से वहम जगाकर उनके बौद्धिक विकास में बाधक नहीं बन रहा?जबकि मीडिया वह पवित्र स्थान है, जहां सूचना को जनता को जागरूक करने के लिए प्रसारित किया जाता है, लेकिन ऐसे वहम भरी चीजों को प्रसारित करके और बीते समय से लोगों में फिर से ये वहमी प्रवृत्तियां जगाकर अवश्य ही मीडिया ने खुद अपने पर सवालिया निशान खड़ा किया है।

यहां यह भी तर्क देना निहायत अनैतिक होगा कि बाजारवाद के युग में फायदा का सौदा आपके उसूलों की नींव कुछ हद तक हिला देता है, क्योंकि यहाँ का नियम ही यही है। इस बात पर भी सवालिया निशान लगता है, क्योंकि आज भी ऐसे कई संगठन हैं, जो बिना नैतिकता को भुलाए बाजार में ही अपना पेट भर रहे हैं। क्योंकि सवाल सिर्फ जरूरतों के पेट भरने का है, नीयत भरने के लिए तो यह बाजार भी एक दिन जवाब दे देगा। चाहे आप फायदा कमाने के लिए अनैतिकता के किसी भी स्तर से नीचे गिर जाएं।

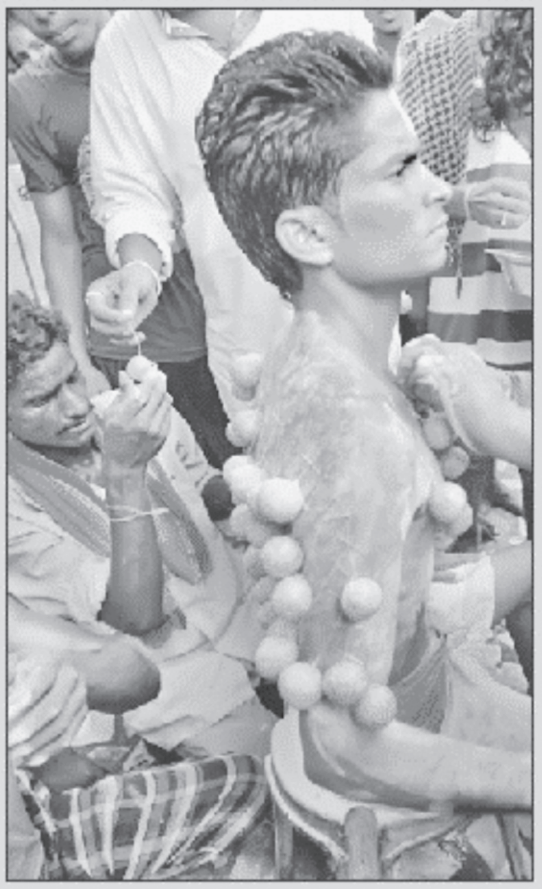

आखिर हम इन बाबाओं के पास क्यों जाते हैं? समस्याएं किसके जीवन में नहीं होतीं? लेकिन क्या इसका यह मतलब है कि हम अपनी बुद्धि को गलत रास्ते पर चलाकर इन वहमों में पड़ जाएं?

हम भी इन सब में कम भागीदार नहीं हैं, क्योंकि मीडिया के बाद यदि खुद आम जनता यानी हमने इन वहमों को तवज्जो नहीं दी होती तो ये बाबा करोड़ों के मालिक नहीं बनते, और उनकी भक्त जनता अब भी दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष कर रही है। लेकिन नासमझ जनता अपनी समस्याओं का व्यावहारिक समाधान निकालने के बजाय बाबा की शरण में जाकर हजारों रुपये लुटा आती है।

आखिर हम ही इन बाबाओं के पास क्यों जाते हैं?समस्याएं किसके जीवन में नहीं होतीं?दुख किसे छूकर नहीं निकलता, लेकिन क्या इन सब का यह मतलब है कि हम अपनी बुद्धि को गलत रास्ते पर चलाकर इन वहमों में पड़ जाएं?अब देखा जाए तो इन बाबाओं को फ्रॉड, धोखेबाज कहने से पहले हमें अपने गिरेबां में झांककर देखना चाहिए। यहां सिर्फ अनपढ़ लोग ही इन सब में लिप्त नहीं हैं, बल्कि बड़े-बड़े, पढ़े-लिखे और अमीर लोगों को इन बाबाओं की शरण में जाते हुए और तरह-तरह के वहमों को करते हुए देखा गया है। यहां तक कि फिल्म स्टार और नामी हस्तियां भी इसमें शामिल हैं। हमारे आदरणीय नेताओं के मुंह से भी कई बार जादू टोने जैसी बात सुनने को मिल जाती है, जो निहायत ही शर्मनाक है। बल्कि यहां तो पढ़े-लिखे लोगों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि वे इस रास्ते पर न चलकर एक साक्षर व्यक्ति की तरह व्यवहार करें ताकि दूसरे लोग भी उनसे सीख लें।

तो अगली बार किसी भी बाबा का धोखा सामने आने पर उसे दोषी ठहराने से पहले उन लोगों पर जरूर गौर करना, जिनकी उनमें अंधी आस्था है। क्योंकि यदि हम मानसिक रूप से सशक्त होंगे और वहम नहीं करेंगे तो ये बाबा अपने आप में अकेले कुछ नहीं हैं।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

- दैनिक जागरण से साभार

श्रावणी एवं यज्ञोपवीत कार्यक्रम

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा व दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त आयोजन में शनिवार 31 अगस्त व 1 सितम्बर (रविवार) को आर्य समाज नोएडा के तत्वावधान में श्रावणी पर्व के उपलक्ष में चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ एवं नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया जायेगा।

जिसमें चतुर्वेद पारायण यज्ञ व अन्तर्गुरुकुलीय संस्कृत श्लोक गीतगायन व अन्तर्गुरुकुलीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता, भजन, प्रवचन एवं विद्वत् संगोष्ठी के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अनेक आर्य जगत् के विद्वानों व गुरुकुलों के ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणियों द्वारा अपनी प्रतिभा को उजागर करने का अवसर प्राप्त होगा।

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

- कैप्टन अशोक गुलाटी
मन्त्री, आर्य समाज, नोएडा,
मो.:-9871798221, 0120-2505731

पुस्तक-समीक्षा

विश्व कल्याण दिव्य भजनमाला

संकलनकर्ता – वानप्रस्थ सत्यनारायण एवं गुलाबी देवी आर्या, कोलकाता
सम्पादक – प्रेम प्रकाश आर्य
प्रकाशक – आर्य समाज, सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट, सुजानगढ़ (राजस्थान) 331507
प्रथम संस्करण – जनवरी, 2009
मूल्य – 500 रुपये

संगीत और भजन का हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक जगत् में विशेष महत्व है। इसी सोपान का अवलम्बन लेकर आर्य समाज ने नवजागरण का मन्त्र देश भर में फूंक कर वेद–प्रचार, पाखण्ड–खण्डन व कुरीति–निवारण का सफल आयोजन किया था। आर्य समाज के सैंकड़ों भजनीकों और उपदेशकों ने भजनों की न केवल रचना की बल्कि उनके संग्रह भी प्रकाशित कराये, जो अब विलुप्त प्रायः हो चुके हैं। आर्य समाज में वेद प्रचार के कार्यक्रम में शिथिलता आने, त्याग व समर्पण के भाव की कमी आने, आजीविका की समस्या का गम्भीर स्वरूप लेने, आडियो–वीडियो की नयी तकनीक आने व आम–जन की रूचि धर्म व अध्यात्म के प्रति घटने के फलस्वरूप अब पुराने भजन भी स्मृति से विलुप्त होते जा रहे हैं। इस क्षरण को रोकने का अत्युत्तम व सामयिक प्रयास प्रस्तुत ग्रन्थ में हुआ है, अतः संकलनकर्ता, सम्पादक व प्रकाशक सभी साधुवाद के पात्र हैं। इस तरह का व्यापक एवं वृहद प्रयास आर्य समाज में पहली बार हुआ है और ऐसे समय में हुआ है जब शिथिलता व उदासीनता का दौर चल रहा है। अतः इसे स्तुत्य प्रयास माना जायेगा।

सत्यार्थ प्रकाश की तर्ज पर इस संकलन के भी चौदह खण्डों को समुल्लासों का नाम दिया गया है और छपते–छपते के नाम से पन्द्रहवाँ खण्ड भी तैयार किया है। इन खण्डों में ईश्वर, शिक्षा, पंच–महायज्ञ, वर्ण व आश्रम व्यवस्था, ऋषिवर दयानन्द प्रशस्ति, सत्संग, वेद व सत्यार्थ प्रकाश महिमा, विद्या–अविद्या, पाखण्ड–खण्डन, राष्ट्र–भक्ति, गो–रक्षण, विश्व–शान्ति, आदि विषयों को समेटते हुए भजनों का चयन, संकलन, प्रकाशन हुआ है। ये भजन आर्य समाज की पुरानी व आधुनिक दोनों पीढ़ियों के रचे हुए हैं।

प्रस्तुत संकलन की छपाई सुन्दर है और कागज भी उत्तम कोटि का लगाया गया है। मूल्य लागत मात्र रखा गया है, अतः महंगाई के इस युग में इसे कम ही माना जायेगा। संकलन में लगभग सौ रचनाकारों के कुल 2002 भजनों का संग्रह है, फिर भी बहुत से रचनाकार ऐसे हैं जो इसमें आने से रह गये हैं। संकलनकर्ता का झुकाव नन्दलाल, प्रकाश, राघव, अमीचन्द, पथिक, पाल, आदि की ओर अधिक झलकता है। यद्यपि 'देश' अमर, बेगराज, मुसाफिर, लक्ष्मण सिंह बेमोल, भीष्म, शोभाराम, जोरावर सिंह, प्रणव आदि, को भी ध्यान में रखा है। प्रसिद्ध व लोकप्रिय भजन तो इसमें लगभग आ ही गये हैं। धर्म–प्रेमी सज्जनों को अपने घर में ऐसे सुन्दर व उपयोगी ग्रन्थ के रखने की हम अनुशंसा करते हैं। आर्य समाजों में तो इसे रखना अत्यावश्यक है, जिससे अधिक से अधिक लोग जान सकें कि आर्य समाज का अतीत कितना भव्य रहा है और कितनी दीवानगी भरा रहा है। कभी स्वामी श्रद्धानन्द भी, जब उन्होंने संन्यास नहीं लिया था, जालन्धर की प्रभात–फेरी में एकतारा लेकर मस्ती में इन भजनों को गाया करते थे। जहाँ कहीं आर्य समाज की भजन–मण्डली पहुँच जाती थी अपार भीड़ उन्हें सुनने को उमड़ पड़ती थी। हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रचलित साँग–परम्परा जैसी कुटेव को जड़–मूल से उखाड़ फेंकने में इन भजन–मण्डलियों की निर्णायक भूमिका रही है। पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञापन देकर यदि भजन आमंत्रित किये जाते तो यह संकलन और अधिक उपयोगी और प्रभावी बन सकता था।

प्रस्तुत संकलन में कहीं यह संकेत न मिलना अखरता है कि अमुक भजन का रचनाकार कौन है?इसे सम्पादक का प्रमाद मानना होगा। यद्यपि कुछ भजनों में रचनाकारों ने अपने नाम दिये भी हैं। पुस्तक के आकार को लेकर भी पाठकों को आपत्ति है कि इससे ग्रन्थ को हाथ में पकड़ कर रखना व संभालना दुष्कर है। अतः दीर्घकाल तक इसे सत्यनारायण की कथा बनने से बचाके रखना कठिन है। क्या ही अच्छा होता कि ग्रन्थ का आकार बढ़ाकर उसे वर्तमान पृष्ठों के वजाय आधे पृष्ठों में समेट लिया जाता। जिन रचनाकारों के भजन इस संकलन में लिये गये हैं उनके चित्र व संक्षिप्त जीवनवृत्त भी दे दिये जाते और इन भजनीकों ने जो कष्ट उस असुविधा–काल में उठाकर त्यागवृत्ति का, निड़रता, सहनशीलता का परिचय दिया है उसका विवरण भी दे दिया जाता तो ग्रन्थ की उपादेयता और अधिक बढ़ जाती। ग्रन्थ के प्रशस्ति–गान में दो–चार मान्य विभूतियों की ही टिप्पणियाँ पर्याप्त थीं क्योंकि ग्रन्थ अपना परिचय खुद देता है। प्रथम संस्करण में

केवल 500 प्रतियाँ ही छापी गई हैं, जो अपर्याप्त हैं अतः इसका दूसरा संस्करण भी सम्भावित है। आयोजकों से हमारी आशा रहेगी कि जिन कमियों का उल्लेख किया गया है वे आगामी संस्करण में अवश्य दूर होंगी। क्या ही अच्छा हो यदि आधुनिकतम तकनीक का लाभ उठाते हुए इन भजनों के सी.डी./डी.वी.डी. सैट भी मार्किट में आकर धूम मचायें। इसके लिये किसी टी.वी. चैनल को प्रतियोगिता के लिए तैयार किया जा सकता है। सुन्दर सैट व आधुनिक वाद्य–यन्त्र इन भजनों में प्राण फूंक सकते हैं। आर्य समाज भी कोई गुलशन कुमार व अनुराधा पौडवाल पैदा कर सके तो इस क्षेत्र में पुनः हमारी धूम मच सकती है। दयानन्द जीवनी की अमर रचना करके कवि प्रदीप ने जो योगदान दिया उसे सहज में भुलाना क्या सम्भव होगा?

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

जिनकी जिंदगी में लिखा है सिर्फ पीठ पर कोड़े खाना

– रमेश ठाकुर

देश में आज भी कई जातियाँ ऐसी हैं जो दूसरों के सहारे जीने को मजबूर हैं। घुमंतू यानी बंजारा जाति उनमें से एक है। तमाशा दिखाने वाले भीलों की जिंदगी आज खुद एक तमाशा बन कर रह गई है, जिनका न कोई वर्तमान है, न कोई भविष्य। यह हकीकत है महानगर दिल्ली में रहने वाले घुमंतू भीलों (बंजारों) की। इन्हें दो जून की रोटी और चंद सिक्कों के लिए कोड़ों से अपने आपको तब तक पीटना पड़ता है जब तक देखने वाले की आंखें गीली न हों जाएं। कहने के लिए सरकार के पास कल्याणकारी योजनाएँ हैं, पर इन योजनाओं का लाभ घुमंतू जनजातियों को मिला नहीं। इनके लिए जो कुछ भी हुआ है वह कागजों तक सीमित रहा है।

दिल्ली की सड़कों पर बाजारों में कई जगहों पर ये बंजारे लोग मिल जायेंगे। इन्हें लोगों की भीड़ घेरे रहती है, एक महिला गीत के साथ ढोल बजाती है और सामने एक पुरुष अपने आपको कोड़ों से लहूलुहान करता है। सड़ाक सड़ाक कोड़ों की आवाज जितनी तेज आती है, उतनी ही तालियाँ बजती हैं। उनकी यह चीख न सरकार तक पहुँच पाती है और न ही इन तमाशादेखने वालों तक। जैसे ही तमाशा खत्म होता है, लोग हंसने लगते हैं। पैसे मांगने पर कोई गाली, कोई धमकी तो कोई चंद सिक्के दे देता है। ये बंजारे पूरे दिन अपने शरीर पर कपड़े के चाबुक मारते हैं, जिसके बदले ये बंजारे अमूमन 40 से 70 रुपये पूरे दिन में कमा पाते हैं। इनका यह खेल चाबुक तक ही सीमित नहीं रहता है, अपने हाथों में लोहे के स्पॉक घोंप लेते हैं, खून निकलता देखकर लोग खूब आनन्द लेते हैं।

यह लोग अपने आपको भील तेलुगू बताते हैं। यह खासकर महाराष्ट्र के निवासी हैं और दिल्ली के अलावा लखनऊ, बरेली, भोपाल जगहों पर ज्यादा ही पाए जाते हैं। यह ज्यादातर बांस, पॉलीथीन, घास–फूस के छोटे–छोटे तंबुओं में रहते हैं। जहाँ बुनियादी सुविधा के नाम पर इन्हें कुछ भी नहीं मिलता। यहाँ तक कि पानी भी नहीं। जब इन्हें कोई हारी–बीमारी होती है तो इनके पास इतने पैसे नहीं होते हैं कि उसका उपचार कर सकें।

इनको देखने के बाद ऐसा लगता है कि जिस विकास और सम्पन्नता के हम दावे करते हैं वे भोथरे हो चुके हैं या कहें कि विकास की रोशनी जिन तक पहुंचनी चाहिए, उन तक पहुँच ही नहीं पाई हैं। यह कुछ खास वर्गों तक सिमट कर रह गई है। इन लोगों में शिक्षा का स्तर बिल्कुल शून्य है। ये लोग हद से ज्यादा अंधविश्वासी हैं, बीमार होने पर देवता और ओझा के पास जाना हितकर समझते हैं।

इनके पास समस्याएँ ही समस्याएँ हैं, अशिक्षा, गरीबी पहचान पत्र का न होना। इनका खुद का कहीं स्थाई आवास नहीं है, इनके लिए बोलने वाला कोई नहीं है। सही अर्थों में भारत में इन्हें भारत का नागरिक नहीं समझा जाता है। इनकी कमाई इतनी भी नहीं हो पाती है कि ये साल में अपने तन ढंकने के लिए दो जोड़ी कपड़े सिलवा सकें। अपने बच्चें को स्कूल भेजने से परहेज करते हैं। इसके दो कारण हैं इनके बच्चे तीन साल की उम्र से ही कमाना शुरू कर देते हैं (सड़कों पर भीख मांगना, अखबार बेचना) और दूसरा इनका घुमंतू होना।

ये दिल्ली में होली के समय तीन महीने और दिवाली के समय तीन महीने तक ज्यादा रहते हैं, देश के दूसरे हिस्सों में चले जाते हैं। बंजारों से जब इस सम्बन्ध में बात करो तो वे सीधे तौर पर कहते हैं क्या करें?हम कोई दूसरा काम नहीं कर सकते हैं। लोग काम देने से भी कतराते हैं और छुआछूत भी करते हैं।

जनजातियों की स्थिति के अध्ययन के लिए फरवरी, 2006 में बने आयोग के अध्यक्ष बालकिशन रेनके के अनुसार केन्द्र सरकार के पास इन्हें राहत देने के लिए कोई कार्य योजना नहीं है, इसलिए इन्हें राज्यों के अधीन कर दिया गया है। पहली और तीसरी पंचवर्षीय योजना तक इनके लिए प्रावधान था लेकिन किसी कारणवश यह राशि खर्च नहीं हो सकी, तो इन्हें इस सूची से ही हटा लिया गया।

काका कालेलकर आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा था, कुछ जातियाँ अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ी जातियों से भी पिछड़ी हैं। उनके लिए अलग से प्रावधान होना चाहिए। 'मुक्तिधार' संस्था के अनुसार घुमंतू (बंजारे) की जनसंख्या दस करोड़ से भी ज्यादा है। इन्हें आज तक न राशन कार्ड मिला है और न ही मताधिकार का हक। इतनी बड़ी आबादी के साथ इतना बड़ा धोखा, बेहद चिंतनीय है। देश में अनुसूचित जाति जनजाति के लिए करीब पांच सौ करोड़ से भी ज्यादा खर्च का प्रावधान है लेकिन इन्हें कुछ भी हासिल नहीं।

बंजारा जाति की सामाजिक और आर्थिक दशा काफी पिछड़ी हुई है। पिछली प्रदेश सरकारों में इस जाति को पिछड़ी जाति में शामिल करने का आश्वासन दिया लेकिन मामला अटका ही रह गया। सरकारी–गैरसरकारी नौकरियों में निगाह डाली जाए तो इनकी भागीदारी एक फीसद भी नहीं है, बंजारा जाति की सामाजिक दशा सुधारने के लिए केन्द्र और प्रदेश सरकारों से अनुसूचित जनजाति में शामिल करने की माँग भी समय–समय पर उठती रही है। लेकिन इनके उद्धार के लिए किसी ने कोई जहमत नहीं उठाई। राजनीतिक आकाओं ने इसलिए भी कोई पहल नहीं की कि उनके वोट भी तो नहीं मिलते।

– जनसत्ता से साभार

जनजातियों की स्थिति के अध्ययन के लिए फरवरी, 2006 में बने आयोग के अध्यक्ष बालकिशन रेनके के अनुसार केन्द्र सरकार के पास इन्हें राहत देने के लिए कोई कार्य योजना नहीं है, इसलिए इन्हें राज्यों के अधीन कर दिया गया है। पहली और तीसरी पंचवर्षीय योजना तक इनके लिए प्रावधान था लेकिन किसी कारणवश यह राशि खर्च नहीं हो सकी, तो इन्हें इस सूची से ही हटा लिया गया।

डी. ए. वी. पिहोवा में चरित्र निर्माण शिविर हुआ सम्पन्न

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल पिहोवा (कुरुक्षेत्र) में पाँच दिवसीय युवा चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 89 विद्यार्थियों ने भाग लिया जो भिन्न-भिन्न डी. ए. वी. स्कूलों से आए हुए थे। इस अवसर पर नैतिक शिक्षा तथा चरित्र निर्माण एवं आर्य समाज के आधार के विषय में बोलने के लिए डॉ. राजेन्द्र अलंकार प्रोफेसर कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी को विशेष तौर से बुलाया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार व नैतिक मूल्यों जैसे कई गुणों पर बड़े विस्तार से बताया। डॉ. ए. के. सिंह चेयरमैन कम्प्यूटर साईस एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र ने कॉलेजों में दाखिला लेने बच्चों को इंजीनियरिंग के विभिन्न लिए विद्यार्थियों को भरपूर ज्ञान प्रोजेक्टर के माध्यम से दिया। अच्छी सेहत बनाने की प्रेरणा देने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के स्वर्ण पदक विजेता श्री जितेन्द्र ढिल्लन से रूबरू करवाया गया बच्चे आज इस पाँच दिवसीय शिविर का समापन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि अतिरिक्त जिला एवं सेशन जज श्री रजनीश बंसल यमुनानगर रहे जिन्होंने बच्चों को सम्बोधित करते हुए डी. ए. वी. संस्था में लगने वाले चरित्र निर्माण शिविर को जोरदार तरीके से सराहना की। उन्होंने विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किये तथा डॉ. कामदेव झा मैनेजर ने अपने विचार रखे।

धर्म शिक्षकों की आवश्यकता

बीकानेर (राजस्थान) के प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय (आरएसवी) और उससे सम्बन्धित अन्य कुछ विद्यालयों में वैदिक धर्म, मानवीय जीवन मूल्य, राष्ट्रभक्ति, नैतिक शिक्षा, संस्कृत, योग, आसन-प्राणायाम, व्यायाम, सुरक्षा उपाय आदि को सिखाने पढ़ाने हेतु 5 अध्यापक (स्त्री/पुरुष) की आवश्यकता है।

शैक्षणिक योग्यता - स्नातक/स्नातकोत्तर, शास्त्री/आचार्य या समकक्ष। आर्य समाज के गुरुकुल में पढ़े हुए, आर्य समाज व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों-सिद्धान्तों को जानने-मानने श्रद्धा रखने वाले। बी. एड./शिक्षा शास्त्री/एम. एड. को वरीयता।

साथ में विशेष योग्यता - आर्यवीर दल शिक्षक, योग प्राकृतिक चिकित्सा की कोई उपाधि प्राप्त को वरीयता। पति-पत्नी दोनों शिक्षक हों तो भी वरीयता।

वय- 25 से 40 वर्ष तक। (यदि स्वास्थ्य अच्छा है तो अन्तिम आयु सीमा में छूट सम्भव)

वेतन - दस से बीस हजार (योग्यतानुसार) प्रतिमाह।

चयन से पूर्व लगभग 2 माह का प्रशिक्षण (13 अक्टूबर से 7 दिसम्बर, 2013) प्राप्त करना अनिवार्य है। प्रशिक्षण हेतु अधिकतम दस व्यक्तियों का चयन होगा। प्रशिक्षण में सफल व्यक्तियों में से 5 का चयन बीकानेर में सेवा हेतु किया जाना है। शेष सफल व्यक्तियों के लिए भी अन्यत्र सेवा प्राप्ति की सम्भावना है। प्रशिक्षण देहरादून, अजमेर, रोजड़ व बीकानेर में दिया जायेगा। प्रशिक्षण व प्रशिक्षण काल में निवास-भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। घर व शिविर स्थल के बीच आवागमन मार्ग व्यय प्रशिक्षणार्थी को स्वयं वहन करना है।

आवेदन की अन्तिम तिथि - 30 सितम्बर, 2013

सम्पर्क - प्राचार्य, राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर। ई मेल- rsvjnv@gmail.com दूरभाष - 09829207546, 09829218818

इच्छुक व्यक्ति सादा कागज पर अपने समस्त सम्बन्धित विवरणों को लिखकर, अपने चित्र व प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपि सहित ई-मेल से भेज देवें।

आर्य समाज से ही स्वदेशोन्नति सम्भव है

इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए। नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती

"कुप्रथा दहेज एवं सुप्रथा दान"

Param Mitro,
Namaskar!

As "Dahej" has become a Abhishaap in our Bharatiya society, consequently, millions of us are badly suffering from this witch hunt of dowry like demon. Unlike corruption, it is our foremost and moral duty too to uproot it for ever. A lot of highly qualified and pretty daughters are unable to get just suitable match because their parents do not possess enough wealth to get them wedded. What a society we belong to who has lost the very glory of "Kanyadaan" and "Taka Rupaye ka Vivaah" that was famous only not even fifty years back and now we are so thirsty of Dahej that we forget the very bond of love and affection between the two new upcoming families. Alas! God forbidden! why it is so?

In my few lines of verses, I would like to request humbly to our this new chaps and most modern generation to take a vow not to get indulged in such type of heinous activities that can ruin the very social fabric of our admirable and worldwide respected society and help your sisters and daughters to achieve their goal in choosing their counterparts by celebrating "Swayambars" as was prevailing in Vedic period.

- Gajraj Singh

इस संक्रामक क्षयरोग से, लड़ने की हमने अब ठानी।
डरना नहीं! विफल होने से, चाहे कुछ भी हो परेशानी॥

अभिशाप बड़ा है निम्न कोटि का
घृणित विकार बहुत अवर्णनीय है।
है दहेज अग्रसर चरमसीमा पर
कहीं रुकने जैसा नाम नहीं है॥

हो अमित तोष-हर्ष स्वाभाविक
गृह पुत्री-प्राप्ति जब होती है।
शनैः शनैः जब बढ़ती है वह
नींद मात-पिता की खोती है वह॥

कैसे विद्याध्ययन संभव है
या प्रचलित यह दहेज जुटाऊँ।
आता समझ नहीं कुछ मेरे
कैसे अब इसका ब्याह रचाऊँ॥

वर-पिता का ऋण अपार है
लज्जा नहीं उसे कहने की।
हल्दी तक का व्यय चुकाओ
क्षमता नहीं और सुनने की॥

सिर पर केश निहित लघुभ्राता
उतने खरे टके गिन जाना।
शेष दहेज तो स्वतः विदित है
देने में प्रभु नहीं सकुचाना॥

सामाजिक स्तर पहचानो
वर कन्या के परम योग्य है।
अति उत्तम है वेतन उसका
तीन - गुना ऊपर से भी है॥

भोज्य-व्यवस्था में क्या ब्यंजन
सहस्र बरातियों ने नमक पिया है
मय मदिरा माँसाहारी भोजन
मनोरंजनार्थ मस्त ड़ी जे किया है॥

हैं सम्बन्धी या प्रतिद्वन्दी ये
नष्ट करने पर तुले हुये हैं।
करें क्यों नहीं आधा आधा
दहेज पर क्यों अड़े हुये हैं॥

दान-दहेज दो पृथक पहलू हैं
पुण्य-पाप के द्योतक जो।
दान बड़ा प्रेरणात्मक गुण
दहेज उतना ही घृणात्मक जो॥

दहेजप्रथा का दण्ड मित्रगण
हम सबको भरना होगा।
क्यों न प्रयत्न 'गज' करें परस्पर
अन्त शीघ्र करना होगा॥

सामाजिक-सदभाव ह्रास, कलंक की है अचूक निशानी।
डरना नहीं! विफल होने से , चाहे कुछ भी हो परेशानी॥

- गजराज सिंह - दोहा कतर)
e-mail :- gajrajsingh2000@yahoo.com

NDPSo on 23/24 अगस्त, 2013
प्रकाशन की तिथि : 22 अगस्त, 2013

वैदिक सार्वदेशिक 22 से 28 अगस्त, 2013

पंजीयन संख्या *DELMUL/2005/15488*
डाक पंजीकरण संख्या *DL(c)-01/1213/12-14*
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

वैदिक संस्कृति ही हमारा भविष्य होगी

— इन्दु बाला

भारतीय संस्कृति की पोषक है महिला, क्योंकि नैतिक मूल्यों का अवलोकन यथार्थ में वही करती हैं। समाज की प्रथम पायदान पर खड़ी रह कर या फिर उस शीर्ष स्थान पर नेतृत्व की क्षमता को अन्तिम पड़ाव पर ले जाना हो, केवल महिलायें ही अपने काम को पूरी सत्यता, लग्न, उत्साह और साहस से पूर्ण करती है। इतिहास के झरोखे से झाँके तो सैकड़ो उदाहरण भरे पड़े है। समाज की दशा व दिशा का निर्धारण वह बखूबी करती है।

भारत की महिला अपनी संस्कृति को अपने हृदय में धारण कर स्वयं तो क्रियान्वित करती ही है। अपने बच्चों को भी निर्देशित व शिक्षित करती है जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी ले जाना ही संस्कार कहा जाता है। कहीं कहीं रूढ़िवादिता की भी शिकार हो जाती है तो भ्रान्तियाँ व विकृतियाँ भी जन्म लेती है परन्तु यह भी सच है कि उनमें जागरण व बदलाव भी उतनी ही तीव्रता से आता है।

इस समय समाज में सन्धिकाल है। यह वह समय है जब संस्कृतियों में विकृतियाँ तथा अच्छाईयाँ दोनों समानान्तर चलती है। महिलाएं इस समय अगर थोड़ा सहिष्णुता से काम ले तो काम आराम से हो जाएगा। अपने अन्तर जागरण के द्वारा अन्य में जाग्रति लाना ही जीवन का उद्देश्य बनाने से परिवार से लेकर समाज तक सुसंस्कृत होगा। यह काम दबाव या घेरकर सिखाने का नहीं हैं धीरे–धीरे शान्त मन से लग कर जब कोई कार्य होता है वो परिणाम देर से तो आता है परन्तु सुखद होता है।

संस्कृति में हमारा खान–पान, पहनावा, परस्पर वार्तालाप ही उसके गुणों को प्रदर्शित करता है और सुदृढ़ विचार सुन्दर सोच उसका आधार बन उसे पोषित करते हैं। हम बालक पर डण्डा न अपनाकर उसे वैचारिक शक्ति देते हैं तो कुछ सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह ऊपर की ओर ले जाता है। हमारे भोजन में महिलाओं ने जिस प्रकार पूरे विश्व के व्यंजनों को अपनाया है इसे अधिक समय नहीं लगा। पिछले पचास वर्षो के अन्तराल में चाईनीज तथा अन्य विदेशी भोज्य पदार्थ थाली में जगह बनाते चले जा रहे हैं। इसे संस्कृति में सुधार ही तो कहेंगे।

आधुनिक परिपेक्ष्य में वैदिक संस्कृति का भारतीय संस्कृति में समावेश ही आज की सभी समस्याओं का समाधान है। वैदिक काल की अवधारणा आज महिलाओं को उनकी कुंठाओं से निज़ात दिलाने का सबसे सुन्दर, सरलतम व सुगम मार्ग उपलब्ध कर सकती है।

महिलाओं को किस प्रकार अपनी स्वतन्त्रता व स्वावलम्बन का सदुपयोग करना है वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अगर वैदिक मूल्यों का समावेश करलें तो स्वतः ही सुसंस्कृति का पुनर्भव हो जाएगा। हमें पता भी न चलेगा कि कब इतना परिवर्तन इतनी सहजता से आ गया, बस जरा कदम बढ़ाना है। कहना नहीं करना पड़ेगा, तुम्हारा अपना जीवन दूसरों को आईना दिखा देगा। छोटों को समान रखेंगे। अपने बच्चों को सदैव उपदेश करते रहना हमारी सबसे बड़ी भूल है। उन से सम्भाषण करने के दौरान सदैव उनकी भी सुनने की एक अच्छी आदत बनाना आवश्यक है, जिसमें महिला अग्रणी हैं। उन्हें अपनी पुत्रियों की, पुत्रों की हर बात सुनने की इच्छा रहती है, तब ही तो माँ, पिता से अधिक सहजता से आधुनिक परिवर्तन को ग्रहण कर लेती हैं।

वैदिक संस्कृति अत्यधिक आधुनिकता का परिचय देते हुए आज के प्रेम विवाह, महिला का परिवार का पालन पोषण सहजता से स्वीकार करती है। सुशिक्षित होना इस संस्कृति में महिला का अधिकार था तथा अन्य को शिक्षित करना उनका कर्तव्य भी था। आज की महिला भी स्वयं व अन्य को ज्ञानी व अग्रणी भूमिका में देखना चाहती है। हम सब अगर वैदिक संस्कृति की ओर लौटे तो कब सुसंस्कृत हो जायेगें पता भी नहीं चलेगा। बस याद रखना पड़ेगा कि दबाव से बदलाव नहीं आता, विस्फोट अवश्य होता है जो सबके लिए घातक है।

कोषाध्यक्ष– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

यत् ते मध्यं पृथिवी यच्च नभ्यं, यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व, माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः॥

अथर्व. 12.1.12

अनुशीलन – वेदों के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सुभाषितों में यह सुभाषित है – 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' पृथिवी माता है और हम उसके पुत्र हैं।

हमारा और पृथिवी का सम्बन्ध माता और पुत्र का है। पृथिवी हमारे लिए कंकड़, पत्थर, धूल और पर्वतों आदि का समूह ही नहीं है, अपितु एक सजीव माता के तुल्य है। माता और पुत्र का सम्बन्ध मानने पर कुछ माता के कर्तव्य हैं और कुछ पुत्र के। दोनों को अपने–अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए। माता जननी है, अतः उसे अपनी सन्तान की रक्षा करनी चाहिए और पुत्र का कर्तव्य है – माता की रक्षा करना, माता पर कोई संकट न आने देना। नरक या दुर्गति से बचाने वाले को पुत्र कहते हैं।

वेद स्वतः प्रमाण है

ईश्वर की कही हुई जो चारों मंत्र संहिता हैं वे ही स्वयं प्रमाण होने योग्य है, अन्य नहीं। परन्तु उनसे भिन्न जो–जो जीवों के रचे हुए ग्रन्थ हैं, वे भी वेदों के अनुकूल होने से परतः प्रमाण के योग्य होते हैं। क्योंकि वेद ईश्वर के रचे हुए हैं, और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद्यायुक्त तथा सर्वशक्तिवाला है, इस कारण से उसका कथन ही निर्भ्रम और प्रमाण के योग्य है। और जीवों के बनाये ग्रन्थ स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं होते, क्योंकि वे सर्वविद्यायुक्त और सर्वशक्तिमान् नहीं होते।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

वैदिक सार्वदेशिक का बदला हुआ रंगीन स्वरूप बड़ा आकर्षक और सुमनोहर बना है, इसलिए बहुत–बहुत धन्यवाद। सभी लेख सामग्री बड़ी सुलझी हुई और ऊँचे दर्जे की हैं। आपका चयन बड़ा ही सराहनीय है। इसमें कोई शंका नहीं है किन्तु मुझे केवल एक बात थोड़ी खटक रही है। वह यह कि पहले प्रत्येक अंक में एक वेदमंत्र और उसकी व्याख्या आती थी वह बंद हो गई है। यह कुछ ठीक नहीं हुआ है। अपने साप्ताहिक का नाम "वैदिक सार्वदेशिक" है और उसमें वेद मंत्र की व्याख्या ही न हो यह विसंगति लगती है। "वेदोऽखिले धर्ममूलम्" के अनुसार वेद ही सब धर्मों का मूल है। और वेद का मूल ईश्वर है, इसलिए वेद और ईश्वर को मूल में रखकर ही कोई भी कार्य यशस्वी और सफल हो सकता है। इसलिए कृपया आप फिर से प्रत्येक अंक में एक वेद मंत्र और उसकी व्याख्या देने का पुनः शुभारम्भ कीजिएगा। इससे "वैदिक सार्वदेशिक" नाम भी सार्थक रहेगा।

दिनांक 4 से 10 जुलाई के अंक में स्वामी अग्निवेश जी का "आओ! धर्म की चर्चा करें" यह लेख बहुत ही महत्त्वपूर्ण और सारगर्भित है। उनके समग्र सर्वांगीण विचार धारा, चिंतन का निचोड़ है। धर्म के नाम पर जो ऊर्जा पैदा हो रही है या की जा रही है उसका कैसा सदुपयोग किया जाये यह उनकी चिंता वेदना है। यह निश्चित ही चिन्तनीय बात है। दिनांक 18 से 24 जुलाई के अंक में "प्राकृतिक प्रक्रिया" को धार्मिक अंधविश्वास से जोड़कर आस्था का अनैतिक दोहन बन्द होना चाहिए।" यह उनका विचार भी मार्मिक और सराहनीय है। इस दृष्टि से हमें क्या करना होगा?मुझे लगता है कि सार्वदेशिक सभा की ओर से "सदास्था तर्क ऋषि" नाम से एक चैनल शुरू करना चाहिए। साथ ही वेद महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के सर्वांगीण सार्वजनिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक समग्र सिद्धन्तों जैसे वैदिक त्रैतवाद आदि का दर्शन, प्रदर्शन हो सके ऐसी यात्राएँ, पद यात्राएँ निकालकर व्यापक जन–जागरण किया जाए। परमेश्वर आपको सब जिम्मेदारी निभाने का सामर्थ्य दें तथा सब आर्यों का आपको सहयोग प्राप्त हो यही मेरी कामना है।

– संभाजी पवार गुरु जी
मु. पो.-घटांग्रा, वाया-राणी सावरकांठा, जिला-परभणी (महाराष्ट्र)-431536, मो.:-09421867815

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद एवं पाखण्ड के खिलाफ
महर्षि दयानंद की सिंह गर्जना
– सत्यार्थप्रकाश का
११ वां समुल्लास
मंगाये, पढ़े, पढ़वायें, बाटें, भेंट करें
मात्र 20 रुपये सहयोग राशि
10 या अधिक प्रतियाँ मंगाने पर 50 प्रतिशत छूट
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

पाठक अपनी प्रतिक्रिया और अपने क्षेत्र से समाचार जरूर भेजें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
ई-मेल : *sarvadeshik@yahoo.co.in*

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : *sarvadeshik@yahoo.co.in* वैबसाइट : *www.vedicaryasamaj.com*

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।